क़ुरआन

समझकर पढ़ना ज़रूरी है

क़ुरआने हकीम,
हदीसे रसूल (सल्ल.)
और उलमा-ए-कराम
के हवाले से

डॉ० रफ़ीक़ अहमद

क्या क़ुरआन समझकर पढ़ना ज़रूरी है ?

क़ुरआने हकीम, हदीसे रसूल (सल्ल.)
और उल्मा-ए-कराम के हवाले से

डॉ० रफ़ीक़ अहमद

किताब का नाम	:	क्या क़ुरआन समझकर पढ़ना ज़रूरी है ?
लेखक	:	डा० रफ़ीक़ अहमद (पी एच०डी०) प्रवक्ता मुस्लिम इण्टर कालेज फ़तेहपुर, मो० 9451767474
हिन्दी एडीशन	:	2017
प्रतियाँ	:	1000
पृष्ठ	:	72
कम्पोज़िंग	:	शाहनवाज़
प्रिन्टर्स	:	रहमान प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स आबूनगर–फ़तेहपुर
क़ीमत	:	**₹ 25/-**

मिनजानिब

ख़िज़रा लाइब्रेरी

(इस्लामी किताबों का मर्कज़)

सय्यदवाड़ा, फ़तेहपुर

ज़ेरे निगरानी : जमाअते इस्लामी हिन्द,फ़तेहपुर

दो शब्द

क़ुरआन मजीद ख़ालिके कायनात का नाज़िल करदा आखिरी हिदायतनामा है। यह हिदायतनामा बन्दगाने ख़ुदा के लिए नुस्ख़ए कीमिया और सारी इन्सानियत के लिए रहमत व शिफ़ा है। यह किताब, किताबे तिलावत ही नहीं बल्कि किताबे इंक़िलाब और हिदायत का स्रोत है। इस किताब ने सहाबा–ए–कराम की ज़िन्दगियों को तब्दील कर दिया था। उनके अन्दर जो बुनियादी तब्दीली आयी उसका सबब उनका क़ुरआन से गहरा ताल्लुक़ था। वह क़ुरआन हकीम की क़द्र व क़ीमत से वाक़िफ़ थे और उसके मक़सदे नुज़ूल को खूब अच्छी तरह समझते थे। उनकी ज़िन्दगियाँ क़ुरआन की बोलती तस्वीर थीं। वह क़ुरआन की तिलावत का भी सवाब हासिल करते थे मगर क़ुरआन से उनकी यह अक़ीदत सिर्फ हुसूले सवाब या बर्कत तक सीमित न थी, वह क़ुरआन को महज़ बर्कत वाली किताब ही नहीं बल्कि क़ानूने ज़िन्दगी समझते थे। इसलिए वह एक–एक आयत को ठहर–ठहर कर पढ़ते और उस पर ग़ौर व फ़िक्र करते और उसकी शिक्षाओं को अपनी ज़िन्दगी में नाफ़िज़ करते, क़ुरआन के मायने और मतलब को समझे बग़ैर वह आगे नहीं बढ़ते थे। कभी–कभी एक ही आयत के ग़ौर व फ़िक्र पर पूरी रात गुज़ार देते। उनका मामूल था कि जब उनमें से कोई दस आयतों को सीखता तो उनके मायने जाने और उन पर अमल किए बग़ैर आगे न बढ़ते।

आज हमारे पास भी वही क़ुरआन है, मगर हमारे अन्दर कोई तब्दीली क्यों नहीं आती है। इसकी वजह यही है कि हम कलामे रब्बानी को समझकर नहीं पढ़ते, इसीलिये उसकी पवित्र शिक्षाओं से वाक़िफ़ नहीं हैं। हमारी एक बड़ी अक़सरीयत क़ुरआन की तिलावत केवल बर्कत और सवाब हासिल करने के लिए करती

है, उन्हें उसके मायने और मतलब से कोई सरोकार नहीं होता। वह रातो दिन क़ुरआन की तिलावत करते हैं मगर उसकी तालीमात को समझते नहीं। इसमें शक नहीं है कि क़ुरआन की तिलावत भी बाइसे अज्र व सवाब है लेकिन कुरआन के मक़सदे नुजूल की तकमील उसी वक़्त मुमकिन हो सकती है जब कि कुरआन की तिलावत शऊर व समझ और ग़ौर व फ़िक्र के साथ हो। किसी किताब को पढ़ा जाए और उसे समझा न जाये यह जुल्म सिर्फ क़ुरआन के साथ होता है। हर मुसलमान क़ुरआन से अक़ीदत रखता है मगर यह अक़ीदत सिर्फ चूमने, आँखों से लगाने और तिलावत की हद तक सीमित नहीं होना चाहिये। क़ुरआन अपने अक़ीदतमन्दों से यह तक़ाज़ा करता है कि वह इसे ठहर–ठहर कर और समझ कर पढ़ें, उसकी आयतों पर ग़ौर व फ़िक्र करें और उसकी पवित्र शिक्षाओं को अपने अमली ज़िन्दगी में नाफिज़ करें। क़ुरआन मजीद से गहरा सम्बन्ध और ताल्लुक़ ही उम्मत की कामयाबी और सफलता का आधार है।

इस किताबचे में क़ुरआन मजीद व हदीसे रसूल और उल्मा–ए–इस्लाम के कथनों की रोशनी में यह स्पष्ट करने की कोशिश की गयी है कि क़ुरआन समझ कर पढ़ने से ही हमारे ईमान और अमल की इस्लाह हो सकती है और हम कुरआन के मक़सद और मिशन को समझने में कामयाब हो सकतें हैं। बक़ौल इमाम मालिक रह० कि ''इस उम्मत के बाद के हिस्से की इस्लाह उसी चीज़ से होगी जिससे उसके पहले हिस्से की इस्लाह हुयी थी और वह चीज़ है क़ुरआन हकीम।''

वह ज़माने में मोअज़्ज़ज़ थे मुसलमाँ होकर
और तुम ख़्वार हुए तारिके कुरआँ होकर।
(इक़बाल)

डा. रफ़ीक़ अहमद
फ़तेहपुर

क़ुरआन हकीम की रोशनी में ...

❖ यह एक बड़ी बर्कत वाली किताब है जो हमने तुम्हारी तरफ नाज़िल की है ताकि यह लोग उसकी आयतों पर ग़ौर करें और अक़्ल व फ़िक्र रखने वाले इससे सबक़ लें।

(सूरह–साद, आयत–29)

❖ हमने इस क़ुरआन को नसीहत के लिये आसान बनाया है फिर क्या है कोई नसीहत क़ुबूल करने वाला।

(सूरह–क़मर, आयत–17, 22, 32, 40)

❖ क्या इन लोगों ने क़ुरआन पर ग़ौर नहीं किया या इनके दिलों पर ताले चढ़े हुए हैं। (सूरह–मुहम्मद–आयत–24)

अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी रह० फ़रमाते हैं कि ''मुनाफ़िकीन के इस शुब्ह का कि कैसे मालूम हो कि क़ुरआन खुदा का कलाम है? हक़ तआला इसका यह जवाब देते हैं कि यह क़ुरआन में ग़ौर फ़िक्र नहीं करते जिससे साफ़ मालूम हो जाता है कि क़ुरआन अल्लाह का कलाम है।'' (तफ़सीरे उस्मानी)

❖ यह एक पैग़ाम है सब इन्सानों के लिये और यह भेजा गया है इसलिये ताकि इसके ज़रीये लोगों को ख़बरदार किया जाये और जान लें कि हक़ीक़त में खुदा बस एक ही है और जो अक़्ल रखने वाले हैं वह नसीहत हासिल करें।

(सूरह–इब्राहीम, आयत–52)

❖ हक़ीक़त यह है कि अल्लाह के बन्दों में सिर्फ़ इल्म रखने वाले ही उससे डरते हैं। (सूरह–फ़ातिर, आयत–28)

❖ अगर हमने यह क़ुरआन किसी पहाड़ पर भी उतार दिया होता तो तुम देखते कि वह अल्लाह के ख़ौफ से दबा जा रहा हो और

फटा पड़ता है। यह मिसालें हम लोगों के सामने इसलिये बयान करतें हैं कि वह ग़ौर करें। (सूरह–हश्र, आयत–21)

– अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी रह० इस आयत की तफसीर में लिखतें हैं : यानी हसरत व अफ़सोस का मुक़ाम है कि आदमी के दिल पर कुरआन का असर कुछ न हो, हालांकि कुरआन का असर इस क़दर ज़बरदस्त और ताक़तवर है कि अगर वह पहाड़ जैसी सख़्त और मज़बूत चीज़ पर उतारा जाता और उसमें समझने की ताक़त होती तो वह भी कुरआन की अज़मत के सामने दब जाता और मारे खौफ़ के फट कर टुकड़ा–टुकड़ा हो जाता।

(तफ़सीरे उस्मानी)

- यानी यह किताब क़ुरआन ज़िन्दगी गुज़ारने के ऐसे उसूल और कानून बताती है जो निहायत मुनासिब हैं। (सूरह–बनी इसराईल, आयत–9)
- जिन लोगों को हमने किताब दी है वह तिलावत करते हैं जैसा कि इसकी तिलावत का हक़ है और उस पर सच्चे दिल से ईमान लाते हैं। (सूरह बक़रह, आयत–121)
- और रसूलल्लाह (सल्ल०) कहेंगे कि ऐ रब! मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को छोड़ दिया था। (सूरह फ़ुरक़ान, आयत–30)
- वह लोग जो खड़े, बैठकर लेटे हुये अल्लाह को याद करते हैं और ज़मीन व आसमान की तख़्लीक़ के सिलसिले में ग़ौर व फ़िक्र करते हैं। (सूरह आले इमरान, आयत–191)
- लोगो! हमने तुम्हारी तरफ एक ऐसी किताब भेजी है जिसमें तुम्हारा ज़िक्र है, क्या तुम समझते नहीं हो। (सूरह अंबिया, आयत–10)
- और जब उन्हें उनके रब की कलाम की आयतें सुनाई जाती हैं। तो अन्धे, बहरे होकर उन पर नहीं गिरते। (सूरह फ़ुरक़ान, आयत–73)

मौलाना नईम उद्दीन मुरादाबादी रह० इस आयत की तशरीह में फ़रमाते हैं कि ऐसा नहीं है कि सोंचें न समझें बल्कि ध्यान लगाकर सुनते हैं और बसीरत की आंखों से देखते हैं और इस नसीहत से फ़ायदा उठाते हैं।

(कन्ज़ुल ईमान, हज़रत मौलाना अहमद रज़ा रह०, पेज नं० 529)

— अल्लामा इब्ने कसीर रह० ने इसकी तफ़सीर यह की है कि यानी मोमिन के कान कुरआन की आवाज़ के लिए बन्द नहीं होते और न ही वह इसके साथ अंधों का सा मामला करते हैं। बल्कि वह ऐसा गिरोह है जो कुरआन को समझने के लिए ग़ौर व फ़िक्र से काम लेते हैं। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

— अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी रह0 इस आयत की तशरीह में फ़रमाते हैं कि निहायत ग़ौर व फ़िक्र और ध्यान से सुनते हैं और सुनकर प्रभावित होते हैं मुशिरकों की तरह पत्थर की मूर्ति नहीं बन जाते । (तफ़सीर उस्मानी)

❖ और क़ुरआन ठहर ठहर कर पढ़ा करो।

(सूरह मुज़्ज़म्मिल, आयत–4)

–अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी इस आयत की व्याख्या इन शब्दों में करते है यानि कुरआन ठहर–ठहर कर पढ़ो ताकि एक–एक हर्फ समझ में आ जाये। इस तरह पढ़ने से ग़ौर फिक्र और समझने में मदद मिलती है, दिल पर असर ज़्यादा होता है और जौक–शौक भी बढ़ता है। (तफ़सीर उस्मानी)

अल्लामा इब्ने कसीर लिखते हैं यानी क़ुरआन की तिलावत इत्मीनान के साथ करो क्यों कि ऐसी तिलावत क़ुरआन के समझने में सहायक ओर मददगार होती है।

(तफ़सीर इब्ने कसीर)

❖ और जब क़ुरआन पढ़ा जाया करे तो उसकी तरफ कान लगाया करो और ख़ामोश रहा करो, उम्मीद है कि तुम पर रहमत हो। (सूरह आराफ़, आयत–204)

❖ और वह अपनी आयतें लोगों के लिये साफ–साफ बयान करता है ताकि वह नसीहत हासिल करें। (सूरह बक़रह, आयत–221)

❖ सच्चे अहले ईमान तो वह लोग हैं जिनके दिल अल्लाह का ज़िक्र सुनकर लरज़ जाते हैं और जब अल्लाह की आयतें उनके सामने पढ़ी जाती हैं तो उनका ईमान बढ़ जाता है और वह अपने रब पर ऐतमाद रखतें हैं। (सूरह अनफ़ाल, आयत–2)

❖ इसी तरह अल्लाह तआला तुम्हारे लिये अपनी आयतें खोल खोल कर बयान करता है उम्मीद है कि तुम अक़्ल से काम लोगे। (सूरह बक़रह, आयत–242)

❖ इसी तरह अल्लाह तआला तुम्हारे लिये अपनी आयतें खोल खोल कर बयान करता है उम्मीद है कि तुम ग़ौर व फिक्र से काम लोगे। (सूरह बक़रह, आयत–266)

–इस आयत की तफ़सीर में अल्लामा इब्ने कसीर रह0 लिखते हैं कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे सामने यह मिसालें बयान फरमा दीं तुम अब ग़ौर व फ़िक्र करो और सोचो–समझो और सबक व नसीहत हासिल करो। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

❖ क्या वह क़ुरआन पे तदब्बुर (चिन्तन) और ग़ौर व फ़िक्र नहीं करते? अगर वह ग़ैरुल्लाह के पास से होता है तो वह इसमें बहुत सा इख्तिलाफ़ पाते। (सूरह निसा, आयत–82)

❖ यह एक किताब है आपकी तरफ उतारी गयी है पस आपके दिल में उसकी तरफ से तंगी न हो ताकि आप इसके ज़रीये डरायें और ताकि नसीहत हो ईमानवालों के लिये।

(सूरह आराफ, आयत–2)

❖ यक़ीनन हमने क़ुरआन अरबी में उतारा है ताकि तुम अक़्ल से काम लो। (सूरह यूसुफ, आयत–2)

❖ और हमने आप की तरफ अल ज़िक्र (क़ुरआन) उतारा ताकि आप लोगों के लिये अल्लाह कि हिदायत को स्पष्ट कर दें और शायद वह ग़ौर व फ़िक्र करें। (सूरह नह्ल, आयत–44)

❖ और यक़ीनन हमने इस क़ुरआन में मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ इख़्तियार किये हैं ताकि लोग नसीहत क़ुबूल करें।

(सूरह बनी इसराईल, आयत–41)

❖ ऐ लोगों तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से नसीहत आ गयी है यह वह चीज़ है जो दिलों की बीमारियों की शिफ़ा है और जो उसको क़ुबूल कर लें उनके लिए रहनुमाई और रहमत है।

(सूरह यूनुस, आयत–57)

❖ और नसीहत तो अक़्ल वाले ही हासिल करते हैं।

(सूरह आले इमरान, आयत–7)

❖ बेशक़ ज़मीन व आसमान की पैदाइश और रात व दिन में बारी–बारी से आने में इन अक़्लमन्द लोगों के लिए बहुत सी निशानियां हैं। (सूरह आले इमरान, आयत–190)

❖ यह क़ुरआन जो मुझ पर वही किया गया है, उसके नाज़िल होने का मक़सद यह है कि मैं तुम्हें इसके ज़रीये से सचेत करूँ। (सूरह अनआम–19)

❖ क़ुरआन के किस्सों का बयान इन्सानों के लिये वज़ाहत और चेतावनी है और डरने वालों के लिए हिदायत और नसीहत है।

(सूरह आले इमरान–138)

❖ इनके पास दिल है मगर वह इनसे सोचते नहीं। इनके पास आँखें हैं मगर वह उनसे देखते नहीं। इनके पास कान हैं, मगर

वह उनसे सुनते नहीं वह जानवरों की तरह हैं बल्कि उनसे ज़्यादा गये गुज़रे। यह वह लोग हैं जो ग़फ़लत में खोये हुये हैं।

(सूरह आराफ़– 179)

- ऐसा क्यों न हुआ कि उनकी आबादी के हर हिस्से में से कुछ लोग निकल कर आते और दीन की समझ पैदा करते और वापस जाकर अपने इलाके के लोगो को सचेत करते ताकि वह बुरे कर्मों से परहेज़ करते। (सूरह तौबा– 122)
- और हमने यह किताब तुम पर नाज़िल की है जो हर चीज़ को स्पष्ट करने वाली है और मुसलमानों के लिए रहमत और खुशखबरी है। (सूरह नह्ल–89)
- और जिन लोगों को इल्म दिया गया है वह जानते हैं जो कुरआन तुम्हारे रब की तरफ से तुम पर नाज़िल किया गया है वह हक़ है। (सूरह सबा–6)
- ऐ नबी (सल्ल०) पैग़म्बरों के क़िस्से जो हम तुम्हें सुनाते हैं उनके ज़रीये से हम तुम्हारे दिल को मज़बूत करते हैं उनके अन्दर तुमको हक़ीक़त का इल्म मिला। और ईमान वालों के लिए नसीहत और बेदारी नसीब होती है। (सूरह हूद–120)
- इसमें नसीहत का सबक़ है हर उस व्यक्ति के लिये जो दिल रखता है या जो ध्यान से बात को सुने। (सूरह काफ़–37)
- अगले लोगों के इन क़िस्सों में अक़्ल व होश रखने वालों के लिये नसीहत है, यह जो कुछ क़ुरआन में बयान किया जा रहा है बनावटी बाते नहीं हैं बल्कि जो किताबें इससे पहले आयी हुई हैं उन्हीं की पुष्टि करती हैं और हर चीज़ की तफ़सील है और ईमान लाने वालों के लिये हिदायत और रहमत है।

(सूरह यूसुफ– 111)

❖ जो लोग हमारी नाज़िल की हुई रोशन तालीमात और हिदायत को छुपाते हैं हालांकि हम उन्हें इन्सानों की रहनुमाई (मार्गदर्शन) के लिये अपनी किताब में बयान कर चुके हैं, यक़ीन जानों कि अल्लाह भी उन पर लानत (फिटकार) करता है और तमाम लानत करने वाले भी उन पर लानत करते हैं। (सूरह बक़रह–159)

❖ अल्लाह ने बेहतरीन कलाम उतारा है एक ऐसी किताब है कि आपस में मिलती जुलती है जिसके मज़ामीन (विषय) बार–बार दुहराये गये हैं उसे सुनकर उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने रब से डरने वाले हैं और फिर उनके जिस्म और उनके दिल नर्म होकर अल्लाह के ज़िक्र की तरफ राग़िब (उन्मुख) हो जाते हैं। (सूरह ज़ुमर– 23)

❖ ऐ इन्सानों ! तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारे पास रोशन दलील आ गयी है और हमने तुम्हारी तरफ ऐसी वाज़ेह रोशनी भेजी है कि जो तुम्हे साफ–साफ सीधा रास्ता दिखाने वाली है। (सूरह निसा– 174)

❖ ऐ नबी हमने इस किताब को तुम्हारी ज़बान में आसान बना दिया है, ताकि यह लोग नसीहत हासिल करें।

(सूरह दुख़ान–58)

❖ ऐ नबी जो बातें यह लोग बना रहे हैं, उन्हें हम खूब जानते हैं और तुम्हारा काम उनसे ज़बरदस्ती मनवाना नहीं है पस तुम इस कुरआन के ज़रीये उस व्यक्ति को नसीहत करो, जो मेरी यातना से डरे। (सूरह क़ाफ़– 45)

हदीसे रसूल (सल्ल०) की रोशनी में

❖ हज़रत उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया– ''अल्लाह तआला इस किताब के ज़रीये कुछ गिरोहों को (जो इसका हक़ अदा करेंगे) बुलन्द और कामयाब करेगा और कुछ दूसरे गिरोहों को (जो उसकी हक़तलफी करेंगे) पस्ती में झोंक देगा।'' (हदीस– मुस्लिम)

❖ हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि– ''तुम में सबसे बेहतर व्यक्ति वह है जो क़ुरआन का इल्म हासिल करे और क़ुरआन का इल्म दूसरों को सिखाये।'' (हदीस– बुखारी)

3. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया– ''दो तरह के लोगों पर हसद (गर्व) करना जाइज़ है एक वह व्यक्ति जिसे अल्लाह ने क़ुरआन का इल्म दिया तो वह रात व दिन उसका हक़ अदा करता है और दूसरा वह व्यक्ति जिसे अल्लाह ने माल अता किया हो तो वह उसमें से रातो दिन अल्लाह की राह में खर्च करता है।'' (हदीस–बुखारी, मुस्लिम)

5. रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया– ''दिलों को भी उसी तरह जंग लग जाता है जिस तरह पानी से लोहे को जंग लग जाता है।'' सहाबा रज़ि० ने पूछा या रसूलल्लाह (सल्ल०) दिलों के जंग दूर करने वाली चीज़ क्या है? फ़रमाया–''मौत को याद करना और क़ुरआन मजीद का पढ़ना।''

(हदीस– बैहक़ी)

6. आप (सल्ल०) ने फ़रमाया कि–''हर चीज़ के लिये शराफ़त और गौरव हुआ करता है जिसमें वह फ़ख़्र (गर्व) किया करता है मेरी उम्मत की रौनक़ और इफ़्तिखार क़ुरआन है।'' (हदीस)

7. रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया– ''क़ुरआन की तिलावत बराबर करते रहो और उसका पूरा ख़्याल रखो। अगर इसकी तरफ से ग़फ़लत बरतोगे तो वह तुम्हारे दिल व दिमाग़ से उतनी ही तेज़ी से निकल जायेगा जितनी तेज़ी से बन्धा हुआ ऊँट जब खुलता है तो भागता है।''

(हदीस– बुखारी व मुस्लिम)

8. आप (सल्ल०) ने फ़रमाया– ''जब अहले ईमान इकट्ठे होकर अल्लाह के किसी घर (मस्जिद) में क़ुरआन पढ़तें हैं और उसे आपस में समझते–समझाते हैं तो उन पर सक़ीनत (रहमत) नाज़िल होती है। रहमत उन्हें ढांप लेती है और फ़रिश्ते उन्हें घेर लेते हैं और अल्लाह तआला अपने करीबी फ़रिश्तों में उनका ज़िक्र करता है और जिस शख़्स को उसके अमल ने पीछे कर दिया उसका नसब (वंश) उसे आगे नहीं बढ़ा सकता।'' (हदीस मुस्लिम)

9. हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि– ''जो व्यक्ति क़ुरआन में मशगूल (व्यस्त) होने की वजह से न तो मेरा ज़िक्र कर सका और न मुझसे अपनी ज़रूरतों के लिये सवाल कर सका तो मैं उसे सवाल करने वालों से बढ़कर अता करूंगा। अल्लाह का कलाम क़ुरआन सारी क़ायनात के कलाम से बढ़कर और आला और अफ़ज़ल है जैसे अल्लाह अपनी सारी मख़लूक़ (सृष्टि) से आला और अफ़ज़ल है।

(हदीस– तिर्मिज़ी)

10. रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया– कुरआन पर घड़ी भर का तफ़्क्कुर (ग़ौर व फ़िक्र) साल भर की नफ़्ली इबादतों से बेहतर है। (हदीस– इब्ने माज़ा)

11. आप (सल्ल०) ने फ़रमाया– कुरआन वाले कुरआन से तकिया न लगाओ और उसकी तिलावत रातो दिन ऐसी करो जैसा कि उसका हक़ है। कुरआन की इशाअत (प्रचार–प्रसार) करो, उसको अच्छी आवाज़ से पढ़ो और उसके मायने और मतलब में ग़ौर व फ़िक्र करो ताकि तुम कामयाब हो और उसका बदला दुनिया में तलब न करो, आख़िरत में उसके लिये बड़ा अज्र है। (हदीस– बैहक़ी)

12. हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि– ''मैं सूरह अनज़लना और अलक़ारिया यानी छोटी सूरतें सोच समझकर तिलावत करूं तो इसे उससे ज़्यादा बेहतर समझता हूँ कि सूरह बक़रा, सूरह आले इमरान फर–फर पढ़ जाऊँ और कुछ न समझूँ।

(बहवाला तालीमुद्दीन अज़ इमाम गज़ाली रह0)

13. रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया– ''ऐ कुरआन का इल्म रखने वालों, इसकी बेहुरमती न करो और न उससे ग़फलत बरतो, उसकी तिलावत का जो हक़ है इसी तरह दिन में रात में इसकी तिलावत करते रहो और उसके अल्फ़ाज़ व मायने व मतलब और एहकाम (आदेशों) को फैलाओ और उसे अच्छी आवाज़ के साथ पढ़ो और उसके विषयों में ग़ौर व फ़िक्र करते रहो और दुनिया में इसका अज्र न चाहो, आखिरत में इसका सवाब बेइन्तिहा है। (हदीस बैहक़ी)

14. क़ियामत की निशानियों में से हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) के बक़ौल यह निशानी भी है कि कुरआन के

पढ़ने–पढ़ाने से बेरग़बती के नतीजे में शेर व शायरी का ज़ोर हो जायेगा और लोग क़ुरआन का एहतेराम करने के बजाए शेर कहने और सुनने के आदी हो जायेंगें और अक़्ली व फ़िकरी सलाहियतें सुधार और बनाव के बजाये फसाद और बिगाड़ में सर्फ होने लगेंगी और फ़िक्र व नज़र का सरमाया दीन व मज़हब से या क़ुरआन से ताल्लुक़ नहीं रखेगा बल्कि शेरी अदब (काव्य–साहित्य) को हसीन व पाकीज़ा नाम दिये जाने लगेंगे।'' (बहवाला ताल्लुक बिल क़ुरआन अहमीयत और तकाज़े पेज–31)

15. हज़रत हारिस (रज़ि०) बयान फ़रमाते हैं कि– ''एक बार कूफ़े की एक मस्जिद में लोगों के पास से गुज़रा तो क्या देखता हूँ कि लोग फ़िज़ूल बातों में लगे हुए हैं, मैं हज़रत अली (रज़ि०) के पास गया और उनको इस बारे में बताया हज़रत अली (रज़ि०) ने पूछा कि क्या लोग सच में ऐसा कर रहे हैं मैंने कहा कि जी हाँ। इस पर उन्होनें फ़रमाया कि मैंने हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को इर्शाद फ़रमाते हुये सुना है कि ''ख़बरदार रहो! जल्दी एक फ़ितना बरपा होने वाला है। मैंने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल इस फ़ितने से बचने की क्या सूरत होगी। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि– ''क़ुरआन में उस बात की ख़बर भी है कि तुमसे पहले क़ौमों पर क्या गुज़री, और इस बात की ख़बर भी है कि तुम्हारे बाद आने वालों पर क्या गुज़रेगी, और इस चीज़ का ज़िक्र भी है कि तुम्हारे मामलात के बीच फैसला करने की सूरत क्या है, यह क़ुरआन एक संजीदा और फैसला कर देने वाला कलाम है, कोई भी मज़ाक की चीज़ नहीं, जो कोई ज़ालिम व जाबिर (अत्याचारी) शख़्स इसको छोड़ेगा तो अल्लाह उसको कुचल डालेगा, और जिसने इसे छोड़कर किसी और जगह से हिदायत हासिल करने की कोशिश की

अल्लाह तआला उसे गुमराह कर देगा, और यह कुरआन अल्लाह की मज़बूत रस्सी है और यह हिकमतभरी नसीहत है और यही सीधा रास्ता है, यह कुरआन वह चीज़ है कि कल्पनायें और धारणाएँ इसे ग़लत रास्ते पर नहीं ले जा सकतीं और भाषायें इसमें किसी प्रकार की मिलावट नहीं कर सकतीं और उलेमा इससे कभी सैर नहीं हो सकते और चाहे इसको कितना ही पढ़ो यह कभी पुराना नहीं होता और इसका इल्म कभी खत्म नहीं होगा, यह कुरआन ऐसी चीज़ है कि जब जिनों ने इसको सुना तो वह यह कहे बग़ैर न रह सकें कि ''हमने एक बड़ा ही अजीब कुरआन सुना है जो कि सीधे रास्ते की तरफ रहनुमायी करती है इसलिए हम उस पर ईमान ले आये हैं'' जो शख़्स कुरआन के मुताबिक बात करेगा वह सच्ची बात करेगा और जो कोई इस के मुताबिक अमल करेगा यक़ीनन उसका अच्छा बदला पायेगा, और जो इसके मुताबिक फैसला करेगा वह ज़रूर इंसाफ का फैसला करेगा और जो लोगों को इसकी पैरवी की दावत देगा, वो सीधे और सच्चे रास्ते की तरफ रहनुमायी करेगा।

(हदीस– तिर्मिज़ी)

16. रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया– ''मैंने तुम्हारे बीच एक ऐसी चीज़ छोड़ दी है, जिसको अगर तुम मज़बूती से थामें रहोगे तो उसके बाद कभी गुमराह न होगे और वह चीज़ ख़ुदा की किताब है। (हदीस–मुस्लिम)

17. हज़रत साद बिन अबी वक्क़ास कहते हैं– मैनें रसूलल्लाह (सल्ल०) को फ़रमाते सुना है कि यह कुरआन ग़म और हुज़्न लेकर नाज़िल हुआ है। जब तुम इसको पढ़ो तो तुम्हें रोना चाहिए और अगर तुम्हें रोना न आये तो अपने

ऊपर रोने की कैफ़ियत तारी करो। कुरआन को अच्छी आवाज़ के साथ पढ़ो जो शख़्स कुरआन को अच्छी आवाज़ के साथ न पढ़े वह हम में से नहीं हैं। (हदीस– इब्ने माज़ा)

18. रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया– ''जिसने तीन दिन से कम में कुरआन पढ़ा उसने कुरआन को समझा ही नहीं।''

(हदीस तिर्मिज़ी)

19. रसूलल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया– ''क़ौम की इमामत (मार्गदर्शन) वह करेगा जो किताबुल्लाह का सब से ज्यादा जानने वाला है। (हदीस– बुखारी)

20. रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया– ''जल्द ही वह वक़्त आने वाला है, जब की कहने वाला कहेगा कि आखिर क्या बात है कि लोग मेरे पीछे नहीं चलते। हालांकि मैं कुरआन का आलिम हूँ और मैंने कुरआन पढ़ा है। बात यह है कि वह कभी मेरी इत्तिबाअ़ (अनुपालन) नहीं करेंगें जब तक कि मैं उनको कुरआन के सिवा और चीज़ ईजाद करके न दूँ (जिस वक़्त ऐसा होने लगें) तो तुम इसकी बिदअत से बचो इसलिये कि हर बिदअत भटकाव और गुमराही है।

(हदीस– अबू दाऊद)

21. हज़रत जाबिर (रज़ि०) नबी सल्ल0 से रिवायत करते हैं कि आप ने फ़रमाया– कुरआन क़ियामत के दिन सिफ़ारिश करेगा और उसकी सिफ़ारिश कुबूल की जायेगी, वह इंसान के हक़ में कोशिश करेगा और उसकी कोशिश कामयाब होगी। जो व्यक्ति इसको अपने आगे रखे वह उसको जन्नत में पहुँचायेगा और जो व्यक्ति इसको अपनी पीठ के पीछे डाल दे वह उसको जहन्नम में फेंक देगा।

(इब्ने हिब्बान, अलमुस्तदरक अल हाकिम)

22. हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया– ''लोगों में कुछ वह हैं जो अल्लाह वाले हैं'' सहाबा (रज़ि०) ने पूछा हुजूर (सल्ल०) वह कौन हैं ? आप ने इर्शाद फ़रमाया– ''कुरआन वाले, अल्लाह वाले और उसके खास बन्दे हैं। (हदीस– इब्ने माज़ा, नसई)

23. हज़रत उसामा (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल0 ने फ़रमाया– ''कुरआन पढ़ो क्योंकि कुरआन क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों की सिफारिश करेगा।'' (हदीस मुस्लिम)

24. रसूलल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया– ''क़ियामत के दिन कुरआन का माहिर फ़रमांबरदार बुज़ुर्ग फ़रिश्तों के साथ होगा जो रसूलों को अल्लाह के पैग़ामात पहुँचाने पर मामूर (नियुक्त) थे और जो शख़्स कुरआन को अटक–अटक बड़ी मेहनत से पढता उसको दुहरा सवाब मिलेगा।

(हदीस– तिर्मिज़ी)

25. हज़रत अली (रज़ि०) ने फ़रमाया– ''उस तिलावत से क्या फ़ायदा जिसमें समझने और सोचने से वास्ता न हो। याद रखो अगर तुम सोच समझ कर एक ही आयत को रात भर पढ़ते जाओगे तो पचास बार बिला समझे कुरआन खत्म करने से अफज़ल है।''

(जामेउल इल्म बहवाला ताल्लुक़ बिल कुरआन पेज नं0 338)

26. हज़रत आयशा (रज़ि०) से रिवायत है कि ''एक रात मेरी बारी में हुजूर (सल्ल०) मेरे पास आये और मेरे साथ रुके फिर फ़रमाने लगे आयशा ! मैं अपने अल्लाह तआला की कुछ इबादत करना चाहता हूँ मुझे जाने दे। मैंने कहा या रसूलल्लाह, अल्लाह की क़सम मैं आप (सल्ल०) का कुर्ब

(निकटता) चाहती हूँ, यह भी मेरी चाहत है कि आप (सल्ल०) अल्लाह की इबादत भी करें। अब आप (सल्ल०) खड़े हुये और एक घड़े में पानी लेकर वुज़ू किया और नमाज़ के लिये खड़े हो गये, फिर जो रोना शुरू किया तो इतना रोये कि दाढ़ी मुबारक तर हो गयी फिर सजदे में गये और इस क़दर रोये कि ज़मीन तर हो गयी फिर करवट के बल लेट गये और रोते ही रहे, यहाँ तक कि हज़रत बिलाल (रज़ि०) ने आकर नमाज़ के लिये बुलाया और आप (सल्ल०) के आँसू रवां देखकर दरयाफ़्त किया कि ऐ अल्लाह के सच्चे रसूल (सल्ल०) आप क्यों रो रहे हैं ? अल्लाह तआला ने तो आपके तमाम अगले–पिछले गुनाह माफ फ़रमा दिये हैं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया– ''बिलाल ! मैं क्यों न रोऊँ? मुझ पर आज की रात यह आयत उतरी है– ''आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में रात व दिन के हेर फेर में यक़ीनन अक़्लमन्दों के लिये निशानियाँ हैं''। वैल (हिलाकत) हो उस शख़्स के लिये जो इसे इसे पढ़े फिर इसमें ग़ौर व फिक्र न करे। (तफसीरे इब्ने कसीर जिल्द 1 पेज– 481)

27. आप (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया कि– ''कुरआन का इल्म रखने वालों की इज़्ज़त करो और जिसने उनकी इज़्ज़त की उसने मेरी इज़्ज़त की। (अल जामेउल सग़ीर जिल्द–1 अल्लामा सुयूती रह0)

28. रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया– ऐ अबूज़र रज़ि० अगर तुम सुबह को एक आयत कलामे पाक की सीख लो तो नफ़्ल की सौ रक़अत से अफ़ज़ल है और अगर इल्म का एक बाब सीख लो तो हज़ार रक़अत नफ़िल पढ़ने से अफज़ल है। (दर्से कुरआन– हज़रत मौलाना अशरफ अली थानवी रह0, जिल्द अव्वल, पेज नं0 1)

29. रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया– ''कुरआन यूँ ही उतरा कि इसका बाज़ हिस्सा बाज़ को झुठलाता नहीं है, बल्कि इसका हर हिस्सा दूसरे की तस्दीक़ करता है तुम लोग कुरआन से जो कुछ पाओ उस पर अमल करो जिसका मतलब न समझ पाओ, कुरआन का इल्म रखने वाले से पूछो।

(हदीस– मुसनद इमाम अहमद)

30. रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया– कुरआन करीम की (समझकर) तिलावत से बन्दा जिस क़दर अल्लाह की कुरबत (निकटता) हासिल करता है किसी दूसरी चीज़ से हासिल नहीं कर सकता। (हदीस अहमद, तिर्मिज़ी)

31. रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया– ''मेरी उम्मत के लिये सबसे अफज़ल इबादत कुरआन की (समझकर) तिलावत है।'' (हदीस– मुसनद अहमद)

32. आप (सल्ल०) ने फरमाया कुरआन या तो तुम्हारे लिये हुज्जत (दलील) है या तुम्हारे खिलाफ हुज्जत है। (हदीस– मुस्लिम)

33. अल्लाह इस कुरआन के ज़रीये कुछ लोगों को बुलन्दी अता करता है जबकि दूसरे लोगों को पस्ती (पतन) में मुब्तेला कर देता है। (हदीस– इब्ने माज़ा)

34. हज़रत अली रज़ि0 से रिवायत है कि उस इबादत में कोई भलाई नहीं है जिसमें इल्म न हो और उस इल्म में कोई भलाई नहीं जिसमें समझ न हो और उस तिलावत में कोई भलाई नहीं जिसमें ग़ौर व फ़िक्र न हो।

(हदीस– सुनन दारमी)

35. हज़रत अब्दुल रहमान अस्लमी रज़ि0 रिवायत करते है कि हमसे उन लोगों ने बयान किया जो कुरआन एहतेमाम से पढ़ा करते थे मसलन हज़रत उस्मान रज़ि0 और अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 वग़ैरा। हज़रात सहाबा जब नबी सल्ल0 से दस आयतें पढ़ लेते तो उसके आगे न बढ़ते यहां तक कि वह उन आयतों में इल्म व अमल की तमाम बातें जान लेते। उनका कहना है कि हमने कुरआन और अमल दोनों को एक साथ सीखा है और इसीलिए वह एक सूरह को याद करने में काफी वक्त लगाते है। (हदीस– मुस्नद अहमद)

36. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 फ़रमाते हैं कि अगर इल्म चाहते हो तो कुरआन पाक के मायने और मतलब में गौर व फिक्र करो कि इसमें अव्वलीन और आखिरीन का इल्म है।
(फज़ाइले आमाल, पेज नं०–500, हज़रत मौलाना ज़करिया रह०)

37. हज़रत माविया रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 से फ़रमाया कि– अल्लाह तआला जिसके साथ ख़ैर व भलाई करना चाहता है उसको दीन की समझ अता कर देता है।
(हदीस– बुखारी)

38. रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फ़रमाया– दीन में समझ रखने वाला शैतान पर हज़ार इबादत गुजारों से ज़्यादा भारी है।
(हदीस– बैहक़ी)

39. सहाबा कराम रज़ि0 कुरआन के मायने और मतलब समझे बग़ैर आगे नहीं बढ़ते थे कभी–कभी एक ही आयत के ग़ौर फिक्र में पूरी रात लगा देते थे उनका मामूल था कि जब उनमें से कोई दस आयतों को सीखता तो उनके मायने व मतलब जाने बग़ैर और उन पर अमल किये बग़ैर आगे न बढ़ता।
(हदीस– बुखारी)

40. रसूल अल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया– जिसने कुरआन में महारत (दक्षता) हासिल कर ली, वह प्रतिष्ठित फ़रिश्तों के साथ होगा और जो शख़्स को कुरआन को अटकता हुआ पढ़ता है, उसमें मेहनत करता है, उसको दोहरा अज्र मिलता है। (हदीस बुखारी)

41. आप (सल्ल0) ने इरशाद फ़रमाया कि– कुरआन का इल्म रखने वालों की इज़्ज़त करो और जिसने उनकी इज़्ज़त की, उसने मेरी इज़्ज़त की।

(अल्लामा सुयूती अल जामेउल सग़ीर, जिल्द–1, पेज 45)

42. एक शख़्स हज़रत अबू दरदा रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और बताया कि मेरे बेटे ने पूरा कुरआन याद कर लिया है। इस पर हज़रत अबू दरदा रज़ि० ने फ़रमाया, खुदाया माफ़ कर कुरआन को याद करने वाला तो वह होगा जो उसकी बातों को तवज्जोह से सुने और उन पर अमल करे।

(बहवाला फ़तेहुलबारी, किताब फ़ज़ाइलुल कुरआन, 62/9)

43. तुम कुरआन पढ़ने वाले को देखकर धोखा न खाओ क्योंकि यह तो बस एक कलाम है, जिसे हम बोलते हैं, अलबत्ता यह देखो कि कौन इस पर अमल कर रहा है।

(हज़रत उमर रज़ि०, बहवाला तकाज़ा–ए–इल्म व अमल अज़ खतीब बग़दादी, पेज नं. 71)

44. आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि– ''जो कोई कुरआन को छोड़कर किसी और ज़रीये से हिदायत हासिल करने की कोशिश करेगा, अल्लाह तआला उसे गुमराह कर देगा।

(हदीस मिश्कात)

उलमा–ए–इकराम
के
अक़वाल

★ अगर कोई शख़्स कुरआन में कलाम के अलावा कुछ नहीं देखता तो ऐसे गुमराह लोगों से कोई ताज्जुब की बात नहीं है क्योंकि रोशनी से भरे हुये सूरज की किरनों से अंधे लोग गर्मी के अलावा कुछ नहीं पाते।

(अल्लामा जलालउद्दीन रूमी रह०, बहवाला कुरआन की दावते फिक्र, प्रो. सऊद आलम क़ासमी, पेज नं. 118)

★ पूरी रात कुरआन मजीद की तिलावत करने से ज़्यादा सवाब इसमें है कि एक आयत ही मतलब और मायने के साथ समझ कर पढ़ें।

(हज़रत इमाम गज़ाली रह०, बहवाला दावत शहरोज़ा 16 मार्च 2013)

★ कुरआन ऐसा गहरा समन्दर है जिससे अव्वलीन और आखिरीन उलूम के चश्मे फूटते हैं, जिस तरह समन्दर से नहरें निकलती हैं, जिस क़ौम में उसकी गहराई में गोता लगाया, वह याकूत (बहुमूल्य रत्न) और मोती निकालकर लाई।

(हज़रत इमाम ग़ज़ाली रह०, बहवाला कुरआन की दावते फिक्र, प्रो. सऊद आलम क़ासमी, पेज नं. 118)

★ तीन दिन से कम में कलाम मजीद ख़त्म करना मकरूह है क्योंकि समझ न सकोगे और बिला समझे पढ़ना गुस्ताख़ी (अपमान) है।

(हज़रत इमाम गज़ाली रह०, तबलीगे़ दीन, पेज नं. 41)

★ अल्लामा इमाम ग़ज़ाली रह० नक़्ल फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं कि मेरे बन्दे ! तुझे मुझ से शर्म नहीं आती? तेरे पास रास्ते में किसी दोस्त का ख़त आ जाता है तो चलते–चलते रास्ते में ठहर जाता है। अलग बैठकर उसे ग़ौर से पढ़ता है। एक–एक लफ्ज़ पर ग़ौर करता है मगर मेरी यह किताब तुझ पर गुज़रती है, मैंने इसमें सब कुछ स्पष्ट कर दिया है। बाज़ अहम बातों को बार–बार दुहराया है ताकि तू इस पर ग़ौर करे और तू बे परवाही से उड़ा देता है । क्या मैं तेरे नज़दीक तेरे दोस्तों से भी कमतर हूँ ? ऐ मेरे बन्दे ! तेरे बाज़ दोस्त तेरे पास बैठकर बातें करते हैं तो तू पूरी तरह से उधर ध्यान देता है। कान लगाता है, ग़ौर करता है, कोई बीच में तुझसे बात करने लगता है तो तू इशारे से इसको रोक देता है, मना करता है। मैं तुझ से अपने कलाम के ज़रीये बातें करता हूँ तो तू तनिक भी ध्यान नहीं देता है। मेरे कलाम को समझने की ज़रा भी कोशिश नहीं करता । क्या मैं तेरे नज़दीक तेरे दोस्तों से भी ज़्यादा ज़लील हूँ ?

(अहयायुल उलूम बहवाला फ़ज़ाइले आमाल, पेज नं. 525)

★ एक बार हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० ने कहा– ''अकसर ऐसा होता है कि एक शख़्स कुरआन पढ़ता है, लेकिन कुरआन ऐसे शख़्स पर लानत करता है, क्योंकि वह इसे समझता नहीं है।'' हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० के नज़दीक कुरआन समझना ईमान की अलामत है। बहुत ज़माना गुज़र चुका है। ऐसा वक़्त आ गया है कि मैं देखता हूँ कि एक शख्स को ईमान लाने से पहले पूरा कुरआन दिया जाता हैं वह सूरह फ़ातिहा से आख़िर तक तमाम सफ़हात (पन्नें) पढ़ जाता हैं न इसे उसके एहकामात (आदेशों) की

खबर होती है न डराने की और न उन मुक़ामात की जहां उसे ठहरना चाहिये। वह इस पर से इस तरह फलांगता है, जिस तरह कोई जुलूस में भागने वाला फलांगता है। हज़रत आयशा रज़ि0 ने एक शख्स को कुरआन को बड़बड़ाने के अन्दाज़ से पढ़ते सुना तो फरमाया : इसने न कुरआन को पढ़ा, न खामोश रहा। हज़रत अली रज़ि0 का कौल है, जिस कुरआन के पढ़ने पर ग़ौर न किया जाये उसके पढ़ने में कोई भलाई नहीं। अबू सुलेमान दारावी कहते है– मैं एक आयत तिलावत करता हूँ और फिर चार–पांच रातें उसके साथ गुज़ारता हूँ, अगली आयत पर उस वक़्त तक नहीं आता जब तक कि उस आयत पर ग़ौर व फिक्र पूरा नहीं कर लेता।

(हज़रत इमाम गज़ाली रह०, बहवाला– कुरआन का रास्ता, खुर्रम मुराद रह०, पेज नं०– 92)

★ यह मालूम है कि हर कलाम के मायने समझना ही मक़सूद (वांछित) हुआ करता है। महज़ उसके अल्फ़ाज़ पढ़ लेना काफी नहीं हुआ करता, पस कुरआन इस बात का ज़्यादा हक़दार है और इस लायक है कि उसे समझा जाये।

(हज़रत अल्लामा इब्ने तैमिया रह०
मुकद्दमा उसूले तफ़सीर पेज नं० 75)

★ आज मुसलमान ज़िन्दगी के हर विभाग में पीछे है यहाँ तक की मज़हब और मज़हबी तालीम में भी हालत खराब है। वह ऐसी किताबों के पढ़ने–पढ़ाने में व्यस्त है जिन्होंने उन्हें कुरआन से दूर कर डाला है। अब किताबुल्लाह की तिलावत हिदायत व अमल के लिये नहीं सिर्फ वक़्तगुज़ारी के लिये रह गयी है हालांकि अगर हमारी मशगूलियत (व्यस्ततायें)

कुरआन में वैसी ही होती जैसे हमारे बुज़ुर्गों की थी तो आज यह हालत न होती कि हम पस्त हैं और दूसरे बुलन्द, काश हम जानते कि दूसरों की सारी तरक़्क़ी व कामयाबी उन्हीं उसूलों के बदौलत है जो कुरआन ने हमारे लिये बनाया था मगर हमने उनकी रूगरदानी (अवहेलना) की और दूसरे काफ़िर होने के बावजूद उनका स्वागत किया और दुनिया भर में छा गये।

(हज़रत अल्लामा इब्ने क़य्यिम रह०, उस्वये हसना–तर्जुमा अब्दुल रज़्ज़ाक़ मलिहाबादी रह०, पेज नं0 328)

★ जिस शख़्स को अल्लाह ने अपनी किताब दी ताकि वह इस पर ईमान लाये, इसमें ग़ौर फिक्र करे, इस पर अमल करे और उसकी तरफ लोगों को बुलाये, मगर वह इसको सिर्फ पढ़ता है, न इसमें ग़ौर व फिक्र करता है, न उसकी पैरवी करता है, न उसके अनुसार फैसले करता है, न उस पर अमल करता है। अल्लाह ने उसकी मिसाल गधे से दी है, जिसकी पीठ पर किताबों का बोझ लदा है, वह नहीं जानता कि इसमें क्या है, उसका काम तो बोझ उठाना है, यही इस दुनिया का हाल है। यह मिसाल जबकि यहूदियों के लिये दी गई है, मगर मायने और मतलब के लिहाज़ से उस शख़्स पर भी ठीक बैठती है, जो कुरआन रखता है, लेकिन उस पर अमल नहीं करता, न तो उसका हक़ अदा करता है और न ही उसकी पूरी तरह रियायत करता है।

(हज़रत अल्लामा इब्ने क़य्यिम रह०,
इमसालुल कुरआन, पेज नं. 31)

★ हमारे किसी बुज़ुर्ग का क़ौल है कि क़ुरआन इसलिये नाज़िल हुआ था कि इस पर अमल किया जाये, मगर लोगों ने इसकी तिलावत को ही अमल करना समझ लिया है ..... लिहाज़ा क़ुरआन पढ़ने वाले वह हैं जो इसका इल्म रखते और उसके आदेशों पर अमल करते हैं, चाहे क़ुरआन उन्हें याद न हो, और जिन लोगों ने क़ुरआन हिफ़्ज़ (कण्ठस्थ) किया हो लेकिन न तो समझते हों और न ही उस पर अमल करते हों, वह क़ुरआन वाले नहीं हैं, चाहे वह इसके हुरूफ़ (वर्णमाला) तीरों की तरह सीधा करके सही–सही अदा कर लें।

(हज़रत अल्लामा इब्ने क़य्यिम रह०, ज़ादुलमआद, जिल्द 1, पेज नं० 238)

★ जो शख़्स यह कहे कि क़ुरआन के मायने और मतलब हम न समझ सकते हैं और न जान सकते हैं। हमारे लिये यही इतना काफी है कि हम क़ुरआन के अल्फ़ाज़ को इबादत व सवाब की हैसीयत से पढ़ लिया करें तो जान लीजिये कि उसके दिल में क़ुरआन से नफ़रत और दूरी रखी गयी है जो कि खुद उसकी अपनी बदबख़्ती और बदनसीबी का मज़हर (प्रदर्शन) है।

(हज़रत अल्लामा इब्ने कइयम रह० बहवाला मुतालये फ़ुरकान के रहनुमा उसूल, पेज नं. 70, डा. ज़कीउर रहमान ग़ाज़ी मदनी)

★ शैतान की चालबाज़ियों में से एक यह भी है कि वह किसी भी तरह से ख़ुदा के बन्दों को क़ुरआन में ग़ौर व फ़िक्र से बाज़ रखना चाहता है। क्योंकि वह जानता है कि मख़लूके ख़ुदा के लिये इसमें हिदायत ही हिदायत है। वह वस्वसा अन्दाज़ी

करता रहता है कि कुरआन में ग़ौर व फ़िक्र करना बड़ा ज़ोखिम भरा काम है। इस तरह वह बन्दा दिखावटी तक़वा में मान लेता है कि मैं कुरआन में ग़ौर व फ़िक्र के लायक नहीं।

(हज़रत इब्ने बहीरा रह० बहवाला मुतालये कुरआन के रहनुमा उसूल पेज नं. 70, डा. ज़की़उर्रहमान ग़ाज़ी मदनी)

★ क़ियामत के दिन अल्लाह तआला के सच्चे रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अपनी उम्मत की शिकायत अल्लाह से करेगें कि न तो यह लोग कुरआन की तरफ सुनते थे, न दिलचस्पी से कुबूलियत के साथ सुनते थे बल्कि दूसरों को भी इसके सुनने से रोकते थे जैसे कि काफ़िरों का क़ौल खुद कुरआन में है कि वह कहते थे ''इस कुरआन को न सुनो और इसके पढ़े जाने के वक़्त शोर गुल करो।'' यही इसका छोड़ रखना था। न इस पर ईमान लाते थे, न इसे सच्चा जानते थे, न इस पर ग़ौर व फ़िक्र करते थे, न इसे समझने की कोशिश करते थे, न इस पर अमल था, न इसके एहकाम (आदेशों) को मानते थे, न इसके मना किये हुये कामों से रुकते थे बल्कि इसके सिवा दूसरे कलाम में व्यस्त और रुचि रखते हैं जैसे शेर व शायरी, ग़ज़लें, बाजे–गानें, राग रागनियां इसी तरह दूसरें लोगों के कलाम से दिलचस्पी लेते थे और उन पर अमल करते थे, यहीं इसे छोड़ देना था।

(हज़रत अल्लामा इब्ने कसीर रह०, तफ़सीरे इब्ने क़सीर जिल्द–4 सूरह फुरकान आयत–30)

★ किताबे इलाही के लिये नेकी व भलाई यही है कि उस पर ईमान रखा जाये, उसकी ताज़ीम व तौक़ीर (सम्मान) की जाये, और उसकी तिलावत की जाये, उसके आदेशों पर अमल और मनाही से परहेज़ किया जाये और उसके उलूम व

मिसालों को समझा जाये और उसकी आयतों पर ग़ौर व फ़िक्र किया जाये और उसकी तरफ लोगों को दावत दी जाये। **(हज़रत अबू अम्र बिन सलाह रह0 जामेउल उलूम वल हिकम जिल्द–1, पेज नं० 221)**

★ मसनून तरीक़ा यह है कि कुरआन को समझ बूझ और ग़ौर व फ़िक्र के साथ पढ़ा जाये। यही मक़सूद और मतलूब (वांछित) है इससे दिल को इत्मीनान होता है और दिल रोशन होता है। अल्लाह तआला कहता है कि यह बर्कत वाली किताब है जो हमने तुम्हारी तरफ नाज़िल की है ताकि वह लोग इसकी आयतों में ग़ौर करे और इर्शाद है क्या यह लोग कुरआन में ग़ौर नहीं करते। इस मसनून क़िरअत (पाठ) का तरीक़ा यह है कि तिलावत करने वाले का दिल कुरआनी अल्फाज़ के मायने और मतलब में मशगूल (व्यस्त) हो चुनांचे वह हर आयत के मायने को समझे और आदेशों और मनाही में ग़ौर करे और इसे इख्तियार करने का इरादा करे।

(हज़रत अल्लामा जलाल उद्दीन सुयूती रह०, अल इत्क़ान फी उलूमिल कुरआन जिल्द–1, पेज–140)

★ जो व्यक्ति दीन को जानना चाहता है उसके लिये ज़रूरी है कि वह कुरआन ही को अपना दोस्त और साथी बनाये। रातो–दिन कुरआन ही से सम्बंध रखे। यह सम्बंध और ताल्लुक इल्मी और अमली (ज्ञानात्मक और व्यवहारिक) दोनों तरीक़ों से होना चाहिए । एक ही पर सन्तोष न करले। जो व्यक्ति यह करेगा वही व्यक्ति अस्ल मक़सद को हासिल कर सकेगा।

(हज़रत इमाम शातबी रह०, अल मुआफक़ात, जिल्द 3, पेज नं.346)

★ अल्लाह तआला ने कुरआन इसलिए नाज़िल किया है कि उसके मायने में ग़ौर व फ़िक्र किया जाये। ग़ौर व फ़िक्र के बग़ैर सिर्फ तिलावत के लिए नाज़िल नहीं किया।

(हज़रत अल्लामा शौकानी रह०,
बहवाल शहरोज़ा दावत 16 मार्च 2013)

★ आयत का मक़सद ये है कि अगर हम पहाड़ जैसी सख़्त चीज़ को अक़्ल और समझ देकर उन पर इस कुरआन को नाज़िल कर देते तो कुरआन की असरअंगेज़ी से वह इस क़दर प्रभावित होते कि खौफ़ से कांप उठते और टुकड़े–टुकड़े हो जाते, लेकिन इन मुनाफ़िकों के दिल इस क़दर सख़्त हैं कि कुरआनी नसीहतों का इन पर कोई असर नहीं होता। ....और यह मिसालें हम लोगों के लिए इसलिये बयान करते हैं ताकि वह इनमें ग़ौर व फिक्र करके नसीहत और सब्र हासिल करें। इस आयत में इशारा है कि इन्सान ग़ौर व फिक्र से काम नहीं लेता और इतना सख़्त दिल है कि तिलावते कुरआन के वक़्त इनके अन्दर खुशू (एकाग्रता) पैदा नहीं होता।

(हज़रत अल्लामा कुर्तबी, तफसीर कुर्तबी, सूरह हश्र, आयत नं० 21,
बहवाला इमसालुल कुरआन, मौलाना खालिद महमूद, पेज नं० 388)

★ कुरआन हकीम के पढ़ने वाले के लिये ज़रूरी है कि वह कुरआन की तिलावत पूरे ग़ौर व फ़िक्र और मुक़म्मल ख़ुशूअ व खुजूअ (एकाग्रता एवं विनम्रता) के साथ करें, क्यों कि यही तिलावते कुरआन का मक़सद है और ऐसी तिलावत से दिल में नूर और इत्मीनान हासिल होता है।

(हज़रत इमाम नववी रह०, अल अज़कार पेज नं. 86)

★ कुरआन मजीद पढ़ने की फ़ज़ीलत आदमियों के लिहाज़ से अलग अलग है। बाज़ के लिये देख कर पढ़ना अफ़ज़ल है, जिसको उसमें ग़ौर व फ़िक्र ज़्यादा हासिल होता हो और जिसको हिफ़्ज़ में ग़ौर फिक्र ज़्यादा हासिल होता है, उसके लिये हिफ़्ज़ पढ़ना ज़्यादा अफ़ज़ल है।

(हज़रत इमान नववी रह.,
बहवाला फ़ज़ाइले आमाल, पेज नं. 512)

★ पहले के लोग कुरआन शरीफ को अल्लाह का फ़रमान (आदेश) समझते थे। रात भर उसमें ग़ौर व फिक्र करतें थे और दिन में उस पर अमल करते थे और तुम लोग उसके हर्फों और ज़ेर व ज़बर को तो बहुत दुरस्त और सही करते हो, मगर उसको शाही फ़रमान नहीं समझते, उसमें ग़ौर व फ़िक्र नहीं करते।

(हज़रत हसन बसरी रह0
बहवाला फज़ाइले आमाल, पेज नं. 514)

★ अगर इन्साफ से काम लें तो कुरआन पाक के नाज़िल होने का असली मक़सद यह है कि उसकी हिदायतों और नसीहतों से हम सबक़ लें। हाँ सिर्फ मत्न (मूल अरबी शब्द) का पढ़ना भी फायदे से खाली नहीं मगर उस शख़्स के हाथ मुसलमानी क्या आयेगी जो कुरआन के मदलूल (मायने व मतलब) को न समझ सके और उस शख्स को कुरआन से क्या माधुर्य और मिठास हासिल हो सकती है जो कुरआन पढ़कर उसके मन्शा और मक़सद को न जान सके।

(हज़रत शाह वली उल्लाह रह० मुकद्दमा फतेहउर्रहमान बहवाला कुरआन मजीद की तफ़सीरें, खुदाबख़्श लाइब्रेरी, पेज नं.– 148)

★ यह सात चीज़ें हैं जिनकी रियायत तरतील (ठहराव) कहलाती है और मक़सूद इन सब से सिर्फ एक है यानी कुरआन पाक को समझना और उस पर ग़ौर व फ़िक्र करना है।

हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिसे देहलवी रह० बहवाला फ़ज़ाइले आमाल, पेज नं. 503)

★ तो क्या यह बात अक़्ल में आती है कि अल्लाह हमारे इस तर्ज़े अमल (कार्यशैली) को पसन्द फ़रमायेगा कि हम अल्लाह के क़ौल को न समझें, और कुरआन में फ़िक्र व नज़र करने वाले किसी ऐसे व्यक्ति के कथन पर मुतमईन होकर करके बैठे रहेंगे, जिस की इताअत व पैरवी के लाज़िम होने की सिलसिले से हमारे पास कोई वह्य नहीं आयी, न संक्षेप में और न ही तफ़सील से। नहीं ऐसा हर्गिज़ नहीं है बल्कि हर व्यक्ति पर वाजिब है कि वह अपनी ताक़त भर जहाँ तक मुम्किन हो किताबुल्लाह की आयतों को अच्छी तरह समझें। उसमें आलिम व जाहिल का कोई कर्म नहीं है।

(हज़रत अल्लामा राग़िबुत्तब्बाख, तारीख अफ़कार व उलूमे इस्लामी हिस्सा अव्वल पेज नं0–339)

★ ख़ुद कुरआन मजीद से यह साबित है कि अल्लाह तआला ने अपनी किताब को अलग–अलग वक़्तों में हालात के तक़ाज़ों और ज़रूरतों के लिहाज़ से थोड़ा–थोड़ा नाज़िल फ़रमाया है ताकि दिलों में इसको समझने और कुबूल करने की ज़्यादा से ज़्यादा योग्यता पैदा हो सके।

(हज़रत अल्लामा हमीदउद्दीन फ़राही रह., मुक़द्दमा निज़ामुल कुरआन, पेज नं0 32)

★ और जो अवाम में मशहूर है कि अल्लाह व रसूल का कलाम समझना बहुत मुश्किल है इसको बड़ा इल्म चाहिये, हमको वह ताक़त कहाँ कि उसके मुताबिक चलें बल्कि हमको यही बातें किफ़ायत करती हैं सो यह बात बहुत ग़लत है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि कुरआन मजीद में बातें बहुत साफ और स्पष्ट हैं इनका समझना मुश्किल नहीं चुनांचे सूरह बक़रा में फ़रमाया '' और बेशक उतारी हमनें तेरी तरफ बातें खुली और इंकार इससे वही करते हैं जो नाफ़रमान हैं।'' यानी इन बातों का समझना मुश्किल नहीं बल्कि इन पर चलना मुश्किल है इस वास्ते कि नफ़्स को आज्ञापालन किसी की बुरी लगती है सो इसलिये जो लोग नाफ़रमान हैं वह उन से इनकार करते हैं। और अल्लाह व रसूल का कलाम समझने को बहुत इल्म नहीं चाहिये क्योंकि पैग़म्बर तो नादानों को राह बताने और जाहिलों को समझाने और बेइल्मों को इल्म सिखाने आये हैं। ..... सो यह हर ख़ास औऱ आम को चाहिये कि अल्लाह व रसूल ही के कलाम को तलाश करे और उसी को समझे और उसी पर चले और उसी के मुताबिक अपने ईमान को ठीक करें।''

(हज़रत मौलाना इस्माइल शहीद रह0, तारीख ज़वाल मिल्लते इस्लामिया पेज नं0 291)

★ कुरआन मजीद का हक़ीक़ी मक़सद तो यह है कि इन्सान अपने अन्दर तरह–तरह के सम्पर्क और ताल्लुक का एक बुलन्द और बरतर शऊर और समझ पैदा करे जो उसके और कायनात के दरम्यान कायम है।

(हज़रत अल्लामा इक़बाल रह0 तशकील ज़दीद इलाहियाते इस्लामिया– पेज नं०– 53, 55, 56)

★ सबसे मज़लूम किताब कुरआन मजीद है। इसलिये कि सारी किताबें और सारी तहरीरें समझकर पढ़ी जाती हैं, लेकिन कुरआन मजीद ही एक ऐसी मज़लूम किताब है कि जिसके बारे में लोगों का ख़्याल है कि अगर हम बेसमझे ही उसको पढ़ लें तो यह हमारे लिये काफी है और इस तरह ही कुरआन मजीद का हक़ अदा हो जाता है।

(हज़रत अल्लामा इक़बाल रह0, बहवाला कुरआन फ़हमी के बुनियादी उसूल, पेज नं. 81)

★ जब से यह उम्मते मुस्लिमा कुरआनी ज़बान के इल्म से बेखबर होने लगी और जब से मुसलमानों ने अल्लाह की किताब पर ग़ौर करना कम कर दिया और अपने अक़ीदे और एखलाक़ की बुनियादें इन्सानों की लिखी हुई किताबों पर रख दीं और जब से अक़ीदे के लिये फ़ने कलाम (तर्क शास्त्र) की किताबे काफी समझी जाने लगीं और इबादात व मामलात के लिये बाज़ फ़िकही और कानूनी किताबों तक नज़रें सीमित होकर रही गयीं। और फिर जब से तज़्किये नफ़्स और एखलाक की दुरस्तगी के लिये बुजुर्गो के बताये हुये ज़िक्र और वज़ीफों को काफी समझा जाने लगा, बस उसी वक़्त से अकसर मुसलमानों में ज़ज्बये तौहीद कमज़ोर हो गया।

(हज़रत अल्लामा रशीद रज़ा रह0 कुरआनी लेक्चर्स पेज नं. 12)

★ इसलिये आम और ख़ास तमाम मुसलमानों पर लाज़िम है कि अपने–अपने दर्जे के मुताबिक़ अल्लाह के कलाम को समझने में ग़फ़लत और कोताही न करें।

(हज़रत शैखुल हिन्द हज़रत मौलाना महमूदुल हसन रह०, मुकद्दमा मौज़हुल फुरकान, पेज नं. 7)

★ मैंने जहाँ तक जेल की तन्हाइयों में इस पर ग़ौर किया कि पूरी दुनिया में मुसलमान मज़हबी और दुनयवी हर लिहाज़ से क्यों बर्बाद हो रहे हैं तो इसके दो वजह मालूम हुये। एक इसका कुरआन को छोड़ देना, दूसरी उनके आपस में मतभेद। इसलिये मैं वहीं से यह तय करके आया हूँ कि अपनी बाकी ज़िन्दगी इस काम में लगाऊँ कि कुरआन करीम के अल्फ़ाज़ और मायने को आम किया जाये। बच्चों के लिये लफ्ज़ी तालीम के मदरसे हर बस्ती में क़ायम किये जायें और बड़ो को आवामी दर्से कुरआन की सूरत में उसके मायने व मतलब से आगाह कराया जाये।

(हज़रत शैखुल हिन्द हज़रत मौलाना महमूदुल हसन रह० बहवाला वहदते उम्मत, मुफ्ती मो. शफ़ी रह०, पेज नं० 38)

★ मेरे बुज़ुर्गो आज हम जिन परेशानियों से गुज़र रहे हैं इसका सबब किताबे इलाही को छोड़ना है। इस्लाम पर पूरी तरह अमल करने से गुरेज़ करना है, हम आस्मानी मदद से वंचित हो गये हैं..... भाइयो ! हर मस्जिद को कुरआन करीम के तर्जुमे व दर्स के ज़रीये तबलीग़े दीन का मर्क़ज़ बना दो।

(हज़रत शैखुल इस्लाम मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह0, बहवाला तर्जुमान दारूल उलूम फरवरी 2001)

★ कुरआन की तस्दीक़ न करना, इसमें ग़ौर व फ़िक्र न करना, उस पर अमल न करना, उसकी तिलावत न करना, उसके सही तलफ्फुज़ (उच्चारण) की तरफ तवज्जो न करना, उससे ग़ाफ़िल होकर दूसरी बेकार या मामूली चीज़ों की तरफ तवज्जो देना यह सब सूरतें दर्जा बदर्जा कुरआन को छोड़

देने के ज़ुमरे में आती हैं।

(हज़रत अल्लामा शब्बीर अहमद उस्मानी रह०, सूरह फ़ुरकान आयत–30)

★ जनाब रिसालतमाब सल्ल0 कियामत के रोज़ ख़ुदा से शिकायत करेंगें कि मेरे परवरदिगार मेरी क़ौम ने क़ुरआन को छोड़ दिया। छोड़ने की कई सूरतें हैं इसको न मानना और इस पर ईमान न लाना भी छोड़ देना है। उसमें ग़ौर व फिक्र न करना और सोच समझ कर न पढ़ना भी छोड़ देना है और इसके अवामिर (आदेशों) पर अमल न करना और मना की हुई चीज़ों से न रुकना भी छोड़ देना है। क़ुरआन की परवाह न करके दूसरी चीज़ों जैसे बेहूदा नावेलों, दीवानों, बेकार की बातों, खेल तमाशों, राग एवं रंग में व्यस्त होना भी छोड़ देना है। अफ़सोस है कि आजकल मुसलमान क़ुरआन की तरफ से ग़ाफ़िल हो रहे हैं। इसके पढ़ने सोचने समझने और हिदायत के फ़ायदा उठाने की तरफ तवज्जो नहीं करते और यह खुल्लम–खुल्ला तर्के क़ुरआन है।

(हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह०, तफ़सीर बयानुल क़ुरआन, सूरह फ़ुरकान आयत–30)

★ कलाम पाक चूँकि अस्ल दीन है उसकी हिफ़ाज़त और प्रसार ही पर दीन का दारोमदार (आधार) है इसलिये इसके सीखने और सिखाने का अफज़ल होना ज़ाहिर है, किसी वज़ाहत की ज़रूरत नहीं अल्बत्ता उसकी किस्में मुख़्तलिफ़ हैं। कमाल इसका यह है कि मतालिब व मक़ासिद (मायने और मक़सद) समेत सीखें और मामूली दर्जा इसका यह है कि सिर्फ अल्फ़ाज़ सीखें।

(हज़रत शैखुल हदीस हज़रत मौलाना ज़करिया रह०, फज़ाईले आमाल पेज–08)

★ अव्वल कलाम पाक की अज़मत दिल में रखे कि कैसा आला दर्जे का कलाम है दूसरा अल्लाह तआला की पाकी बलन्दी और बड़ाई को दिल में रखे, जिसका कलाम है तीसरा दिल को वसवसों व बुराईयों से पाक रखें, चौथा मायने और मतलब में ग़ौर व फिक्र करें और लज़्ज़त के साथ पढ़े ।

(हज़रत शैखुल हदीस मौलाना ज़करिया रह०, फ़ज़ाइले आमाल पेज नं0 491)

★ बेहतर तो यह है कि अरबी समझने पर कुदरत रखता हो तो उसके मायने और मतलब पर ग़ौर करता जाये और रहमत की आयत आये तो खुश हो और ख़ुदा से रहमत मांग ले और जब अज़ाब की आयत आये तो डरे और उससे पनाह मांगे।

(हज़रत मौलाना मुफ़्ती अहमद यार खां नईमी रह० तफ़सीरे नईमी, जिल्द नं0–1, पेज नं0–24)

★ मुसलमानों में जिस तरह और बहुत से ग़लत और ग़ैर इस्लामी अक़ीदे इस्लामी अक़ीदे बनकर दाख़िल हो गये हैं इसी तरह एक यह ख़्याल न सिर्फ जाहिलों बल्कि अकसर पढ़े लिखे और आलिम कहलाने वाले लोगों में भी मशहूर हो चुका है कि कुरआन मजीद का समझना यानी अरबी ज़बान जानने और कुरआन मजीद के अल्फाज़ का मफ़हूम समझते हुये और आयते कुरआनी के मतलब व मायने से वाक़िफ़ होकर कुरआन मजीद से फ़ायदा उठाना बेहद मुश्किल बल्कि ग़ैर मुम्किन है और कोई बहुत बड़ा आलिम जो तमाम बड़ी–बड़ी तफ़सीरों का अध्ययन कर चुका हो मुश्किल ही से किसी आयत के सही मायने और मतलब से परिचित हो सकता है, कम पढ़े लिखे मौलवी या किसी आम पढ़े लिखे

शख़्स की क्या हिम्मत कि कुरआन मजीद की किसी आयत का मतलब समझ सके और किसी अक़ीदे की हिमायत या रद्द में कोई आयत पेश कर सके। इस ग़लत और गुमराह करने वाले अक़ीदे के फैलाव का नतीजा यह हुआ कि अब लोगों को किसी मसले में तहक़ीक (शोध) करते हुये कुरआन मजीद की किसी आयत के तलाश करने का ख़्याल नहीं आता। हिन्दुस्तान के कई शहरों में ऐसे मज़हबी इदारे (धार्मिक संस्थान) क़ायम है जहाँ रोज़ाना ज़्यादा से ज़्यादा फ़तवे पूछे जाते हैं और उन पर फ़तवे लिखे जाते हैं इन हज़ार फ़तवों में जो हर हफ़्ते मुफ़्तियों के कलम से निकलते हैं, मुश्किल से ही कोई एक या दो फ़तवे तलाश किये जा सकते हैं जिनमें कुरआन मजीद की किसी आयत का कोई हवाला मौजूद हो वरना आम तौर पर फ़िक़्ही किताबों के हवालों पर फ़तवों की बुनियाद क़ायम की जाती है। गोया इन किताबों ही को कुरआन मजीद का मर्तबा हासिल हो चुका हो।

(हज़रत मौलाना अकबर शाह नजीबाबादी रह. तारीखे ज़वाल मिल्लते इस्लामिया पेज नं. 289)

★ इस्लाह (सुधार) के लिये पहला काम यह था कि मुसलमानों को कुरआन के सीधे तौर पर अध्ययन और अमल की दावत दी जाये लेकिन यह दावत कुछ फायदेमन्द न थी जब कि कुरआन में समझ और अध्ययन का सामान ग़ायब था।

(हज़रत मौलाना अबुल कलाम आज़ाद– दीबाचा तजुर्मानुल कुरआन पेज– 1, 8, 9)

★ तुम्हारी ग़फ़लत कैसी शदीद और तुम्हारी गुमराही कैसी मातम अंगेज़ है कि तुम शबे क़द्र को ढूंढते हो मगर उसको नहीं ढूंढते जो शबे क़द्र में आया और जिसके आने से इस रात की अज़मत और अहमियत बढ़ी अर्गच तुम उसको पा लो तो तुम्हारे लिये हर रात शबे क़द्र है। किताबुल्लाह को मज़बूती से थाम लो।

(हज़रत मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह०, तर्जुमानुल कुरआन, पेज नं. 933)

ग़ौर व फ़िक्र मुसलमानों पर कुरआन मजीद का बहुत बड़ा हक़ है। लिहाज़ा कुरआन मजीद का हक़ महज़ सजा–संवारकर खुबसूरत और कीमती ग़िलाफों में लपेटकर रख देने से अदा न होगा बल्कि हमें तिलावते अल्फ़ाज़ के साथ उनके मायने भी समझना होगा। अपने आपको इस कलाम के रंग में रंगना होगा और अपने आपको इसका ताबेदार और फ़रमांबरदार बनाना होगा। ताकि हम अल्लाह तआला की इस आखिरी हिदायत और उसके अनवार व बरकात से फैज़याब हो सकें.....इंसान को तिलावते कुरआन के दौरान एक–एक आयत पर रुकना चाहिये और उसके मायने व मफ़हूम को समझकर आगे बढ़ना चाहिये। आयते रहमत का तज़क़िरा हो तो वहाँ रुककर अल्लाह तआला का शुक्र बजा लाये, कहीं अज़ाब का ज़िक्र हो तो वहाँ अल्लाह से अपने गुनाहों की बख़्शिश तलब करे और हर क़िस्म के अज़ाब से पनाह मांगे।

(हज़रत मौलाना फ़तेह मोहम्मद जालन्धरी, रोज़नामा इंक़लाब उर्दू, 18 दिसम्बर 2015, पेज नं. 10)

★ कुरआन करीम मुकम्मल किताब है, इसमें अल्लाह तआला ने स्पष्ट रूप से बता दिया है कि हमारे अक़ीदे क्या होंगे? समाजी, इस्लाह व सुधार की बुनियादें क्या होंगी ? हमारे यहाँ क्या कानून और नियम होंगे ? इसमें कुछ चीज़ों का हुक्म (आदेश) भी दिया गया है, कुछ बातों से रोका भी गया है। तो क्या मुसलमानों ने कुरआन पाक पर अमल किया? इसमें जो अक़ीदे बयान हुये हैं, उन पर उन्होंने ध्यान दिया ? इसमें जो उद्देश्य और मक़सद निर्धारित किया गया है, उनको उन्होंने समझा ? और इस ज़िन्दगी से सम्बन्धित जो सामाजिक और सामूहिक कानून दिये गये हैं, इनको उन्होंने अपने जीवन में उतारा ? अगर गुफ्तगू और बहस से हम इस नतीजे पर पहुंचें कि हमने यह सारे काम कर लिये हैं, तो हम बधाई के पात्र हैं कि हमने अपने मक़सद को पा लिया है। लेकिन हम कुरआन मार्ग से दूर और कुरआनी आदेशों से ग़ाफ़िल हैं तो फिर हमारा फ़र्ज़ होगा कि हम खुद ही इस रास्ते की तरफ पलटें और अपने मानने वालों को भी इसी तरफ लायें।

(हज़रत इमाम हसन अल बन्ना शहीद रह०, मुजाहिद की अज़ान, पेज नं० 173)

★ कुरआन तो ख़ैर व भलाई का स्रोत है। जितनी और जैसी ख़ैर तुम इससे मांगोगे यह तुम्हें देगा। तुम उससे महज़ जिन्न, भूत भगाना, खांसी, बुखार का इलाज और मुकदमे की कामयाबी और नौकरी के हुसूल और ऐसी ही छोटी ज़लील और बेहक़ीक़त चीज़ें मांगते हो तो यही तुम्हें मिलेंगी। अगर दुनिया की बादशाही और ज़मीन की हुकूमत मांगोगे तो वह

भी मिलेगी और अर्शे इलाही के क़रीब पहुंचना चाहोगे तो यह तुम्हें वहां पहुंचा देगा। यह तुम्हारे अपने ज़र्फ (क्षमता) की बात है कि समन्दर से पानी की दो बूंदे मांगते हो। वरना समन्दर तो दरिया बख़्शने के लिये भी तैयार है।

(हज़रत मौलाना सै० अबुल आला मौदूदी रह०, अक़वाले मौदूदी पेज नं० 37)

★ आजकल लोग कुरआनी आयतों को मुख़्तलिफ़ दुनयवी मक़ासिद के लिये पढ़ते हैं, और हज़ारों तस्बीहें पढ़ डालते हैं, मगर कामयाब नहीं रहते, उसकी वजह यही है कि वह मग्ज़ को छोड़कर छिलके होते हैं और उन्हें पानी देकर उम्मीद रखते हैं कि फल देंगे। आयाते कुरआनी के अल्फ़ाज़ उनकी ज़बान से अदा होते हैं। मगर ज़हन उनके मायने व मतलब से नाआशना होता है। दिल में अल्लाह के बजाय ग़ैरुल्लाह बसा होता है। नियत में ख़ुलूस के बजाय खोट होता है। इरादों और ख़्वाहिशों में पाकीज़गी के बजाय नापाकी होती है। रग़ों में जो खून दौड़ता है वह नाजायज़ तरीकों से कमाई हुई ग़िज़ा से पैदा हुआ है। जिस्म का हर हिस्सा उन ख़िलाफ़े एहकामे कुरआन हरकात पर गवाह होता है। जिन में इस नाम मात्र आमिल ने उसको इस्तेमाल किया है और खुद वह ज़बान जिस पर कुरआनी अल्फ़ाज़ जारी हैं रातो–दिन झूठ, ग़ीबत, बदकलामी और अश्लीलता से लिपटी होती है। क्या कोई अक़्लमंद यह बात मान सकता है कि इस तरीके से कुरआन की किसी आयत को पढ़कर कोई फ़ायदा हासिल करना मुमकिन है ? अगर कोई शख़्स बीमारी में बदपरहेज़ी करे, हकीम की हिदायत पर

अमल न करे, जो दवायें हकीम ने बताई हैं, उनको इस्तेमाल भी न कराये और सिर्फ नुस्ख़े को सामने रखकर हर दवा का नाम दो–दो हज़ार मर्तबा पढ़ लिया करे तो तुम बेतकल्लुफ़ हुक्म लगा दोगे कि उसका इस तरीके से शिफ़ायाब होना मोहाल है। फिर जब एक शख़्स कुरआन को न समझता है, न उसके एहकाम पर अमल करता है बल्कि इसकी हिदायात की ख़िलाफ़वर्ज़ी करता है और सिर्फ उसके अल्फ़ाज़ से बरकत और तासीर हासिल करना चाहता है तो उसकी नाकामयाबी का हुक्म लगाने में तुम्हें क्यों ताम्मुल है ?

(हज़रत मौलाना सै० अबुल आला मौदूदी रह०, दीन के अस्ल मुतालबात और हमारा तर्ज़े अमल, पेज नं० 9)

★ अल्लाह के दोस्तों और आशिकों के लिये सारी लज़्ज़त व मिठास कुरआन में है और उनके दिलों की राहत व सुकून का सामान इसी में है। कलाम के साथ ही उनका दिल मुतक़ल्लिम (कलाम करने वाले) से वाबस्ता हो जाता है और कुरआन के आदेशों, तज़्करों, नसीहतों, खबरों, वादों और वईद (चेतावनी) को सुनते ही इनके दिलों में गुनाहों से बचने की फिक्र पैदा हो जाती है और खुदा की अज़मत में वह अपनी हस्ती गुम कर देते हैं।

(हज़रत मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी रह०, ज़िक्रे रसूल पेज नं० 92)

★ इन्सान की सब से बड़ी ख़ुशनसीबी अपनी ताक़त भर कुरआन करीम में मशगूल (व्यस्त) होना है और सबसे बड़ी बदनसीबी इससे ग़ाफिल हो जाना है, इसलिये हर मुसलमान को इसकी फ़िक्र तो फर्ज़ और ज़रूरी है कि

कुरआन करीम को सही तलफ्फुज़ (उच्चारण) के साथ पढ़ने और औलाद को पढ़ाने की कोशिश करे और फिर जितना मुम्किन हो उसके मायने और मतलब को समझने और उन पर अमल करने की फ़िक्र में लगा रहे और उसको अपनी पूरी उम्र का वज़ीफा (नियम) बनायें और अपने हौसले और हिम्मत के मुताबिक़ उसका जो हिस्सा भी नसीब हो जाये उसको इस दुनिया की सबसे बड़ी नेमत समझें।

(हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफी रह0, तमहीद मारिफुल कुरआन जिल्द–1, पेज नं०– 59)

★ इससे ज़ाहिर होता है कि कुरआन को छोड़ देने से मुराद कुरआन का इनकार है जो काफ़िरों ही का काम है मगर कुछ रिवायतें यह भी आयी हैं कि जो मुसलमान कुरआन पर ईमान तो रखते हैं मगर न इसकी तिलावत की पाबन्दी करते हैं, न इस पर अमल करते हैं, वह इस हुक्म में दाखिल हैं हज़रत अनस रज़ि0 फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया– ''जिस शख़्स ने कुरआन पढ़ा मगर फिर उसको बन्द करके घर में टाँग दिया न इसकी तिलावत की न पाबन्दी की, न इसके एहकाम में ग़ौर किया। क़ियामत के रोज़ कुरआन उनके गले में पड़ा हुआ आयेगा और अल्लाह की बारगाह में शिकायत करेगा कि आपके इस बन्दे ने मुझे छोड़ दिया था, अब आप मेरे और इसके मामले का फैसला फरमा दें।

(हज़रत मौलाना मुफ़्ती मु० शफी रह०. माअरिफुल कुरआन तफसीर, सूरह फुरकान आयत नं. 30)

★ कुरआन करीम ने अपने नसीहत और सबक हासिल करने वाले विषयों को ऐसा आसान करके बयान किया है जिस तरह बड़े से बड़ा आलिम व माहिर, दार्शनिक और हकीम इससे फायदा उठाता है, इसी तरह हर व्यक्ति जिस को इल्म से कोई सम्बंध न हो वह भी नसीहत और सबक के विषयों को समझकर इससे प्रभावित होता है। इस आयत में यस्सरना के साथ लिज्ज़िकरि की कैद लगाकर यह भी बतला दिया गया कि कुरआन को याद करने और उसके मज़ामीन (विषय) से नसीहत और सबक हासिल करने की हद तक इसको आसान कर दिया गया है जिससे हर आलिम व जाहिल, छोटा और बड़ा बराबर से फायदा उठा सकता है।

(हज़रत मौलाना मुफ्ती मुहम्मद शफी रह०, तफसीर– मआरिफुल कुरआन सूरह कमर आयत नं. 17–32)

★ बहुत से लोग इसको (कुरआन) बस बर्कत वाली किताब और दुआओं का मजमुआ (संग्रह) समझते हैं जिनका बार–बार दोहराना तो ज़रूरी है लेकिन वह इसको ग़ौर व फ़िक्र का महल नहीं समझते। बहुत से लोग इसको मौत की सख़्तियों को दूर करने या ईसाले सवाब की किताब समझते हैं और जब भी वह इसकी तरफ मुतवज्जे होते हैं तो इसी ग़रज के लिये मुतवज्जे होते हैं। बहुत से लोग इसको आफतों और मुसीबतों को दूर करने का तावीज़ समझते हैं और उनकी सारी दिलचस्पी उसके साथ बस इसी पहलू से होती है इस तरह की ग़लतफहमीयों में पड़े हुये मुसलमान ना मुम्किन है कि कुरआन हकीम से वह फ़ायदा उठा सकें जिसके लिये फिल हक़ीक़त वह नाज़िल हुआ है। इन लोगों की मिसाल बिल्कुल ऐसी है कि इनको एक तोप दी गयी कि वह इसके

ज़रीये से शैतान के किले मिस्मार करें लेकिन वह इसको मच्छर मारने की मशीन समझ बैठे। .....सहाबा एकराम रज़ि० जो कुरआन के पहले मुख़ातिब थे, वह कुरआन को बराबर ग़ौर व फ़िक्र के साथ पढ़ते थे और जो लोग जितना ही ग़ौर व फ़िक्र करते थे वह उतने ही कुरआन के फ़हम (समझ) में मुम्ताज़ थे। बाज़ सहाबा रज़ि0 ने खुद अपने बारे में यह शहादत दी है कि उन्होनें सूरह बकरा पर पूरे आठ साल सर्फ किये। सहाबा रज़ि0 ने कुरआन मजीद के अध्ययन के लिये हलक़े भी क़ायम किये थे, जिनमें अहले ज़ौक हज़रात इकट्ठे होकर सामूहिक अध्ययन करते थे ताकि एक दूसरे के ग़ौर व फ़िक्र से फ़ायदा उठा सकें इस तरह के कुरआनी हलकों से नबी सल्ल0 को खास दिलचस्पी थी और रिवायतों से पता चला है कि आप सल्ल0 फ़िक्र के उन हलक़ों को ज़िक्र के हलक़ों पर तर्जीह (प्राथमिकता) देते थे। .....दुनिया की शायद ही कोई किताब हो जिसने कुरआन हकीम से ज़्यादा इस बात पर ज़ोर दिया हो कि उसका हक़ीक़ी फायदा सिर्फ उसी सूरत में हासिल किया जा सकता है जब उसको ग़ौर व फिक्र के साथ पढ़ा जाये लेकिन यह अजीब माजरा है कि यही एक किताब है जो हमेशा ऑख बंद करके पढ़ी जाती है। मामूली से मामूली किताब भी पढ़ने के लिए लोग खोलते हैं तो उसके लिए सबसे पहले अपने दिमाग़ को हाज़िर करते हैं लेकिन कुरआन के साथ यह अनोखी रविश है कि जब इसको पढ़ने का इरादा करते हैं तो आम तौर से सबसे पहले अपने दिमाग़ पर पट्टी बांध लेते हैं।

(हज़रत मौलाना अमीन अहसन इस्लाही रह०, तफ़सीरे तदब्बुरे कुरआन पेज नं. 37–40)

★ कुरआन मजीद इस ज़मीन पर अल्लाह रब्बुलआलमीन की सबसे बड़ी नेमत और बन्दों की सबसे बड़ी ज़रूरत है। इन्सानी क़ामयाबी एक बेमायने लफ़्ज़ बन जाता है, अगर इन्सान कुरआन से अपरिचित हो।

(हज़रत मौलाना सद्रुद्दीन इस्लाही , कुरआन मजीद का परिचय, पेज नं. 5)

★ कुरआन खुदा की मख़लूक़ को फ़ायदा पहुचाँने के लिये उतारा गया है और दुनिया को उसके सारे मज़ामीन (विषयों) पर ग़ौर करने उससे नतीजा निकालने और उस पर अमल पैरा होने की हिदायत है वह सिर्फ बर्कत के तौर पर ज़बानों से तिलावत करने और बतौर तावीज़ व नक़्श के गले में डाल लेने और बतौर एक मोहतरम और मुक़द्दस चीज़ के सर आँखो पर रख लेने और बोसा देने के लिये नाज़िल नहीं हुआ है बल्कि इसलिये कि उसके मायने व मतलब और हक़ीक़तों से फ़ायदा उठाया जाये। इसमें ग़ौर व फ़िक्र किया जाये ओर उससे अपनी अमली ज़िन्दगी (व्यवहारिक जीवन) के लिये सबक़ हासिल किये जायें।

(हज़रत मौलाना सैय्यद अली नक़ी, मुक़दमा तफ़सीरे कुरआन पेज नं0 107)

★ कुरआन अपने ख़ज़ानों की कुन्जियाँ सिर्फ उन लोगों को अता करता है जो इस एहसास व जज़्बे के साथ उसकी बारगाह में हाज़िर होते हैं कि कुरआन समझकर उस पर अमल करेंगे। कुरआन इसलिये नहीं नाज़िल हुआ है कि वह ज़ेहनी लज़्ज़त और तस्कीने ज़ौक की किताब बनकर रह जाये या महज़ अदब व फ़न (साहित्य एवं कला) का हिस्सा क़रार पाये या इसे किस्से कहानियों और तारीख का दफ़्तर समझा जाये

अगर्चे उसके मज़ामीन (Matter) ज़िमनी तौर पर इन तमाम खूबियों से मालामाल हैं मगर उसके नुजूल का मक़सद यह है कि वह किताबें ज़िन्दगी हो वह इन्सान का रहनुमा हो। वह यह बताने के लिये आया है कि मालिकुल मुल्क को ज़िन्दगी का कौन सा अदब (साहित्य) महबूब है।

(हज़रत सैय्यद कुतुब शहीद रह० जादह व मन्ज़िल पेज नं० 86)

★ कुरआन मजीद को अपनी ज़ाती किताब समझा जाये, यह किताबे हिदायत है, यह किताबे अबदी (सर्वकालिक) है, यह किताबे आस्मानी है, लेकिन मेरी ज़ाती (व्यक्तिगत) किताब भी है, मेरा ज़ाती हिदायतनामा भी है, इसमें मेरी ज़ाती कमज़ोरियाँ बयान की गयी हैं, मेरी ज़ाती बीमारियों की निशानदेही की गयी है, कुरआन मजीद में हर आदमी अपने को तलाश कर सकता है, यह जब होगा जब कि आप इसको ज़िन्दा किताब समझें या अपनी किताब समझें और आप में अपनी इस्लाह का जज़्बा हो, लोगों की इस्लाह तो बाद में होगी, पहले अपनी इस्लाह हो जाये।

(हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी रह., कुरआनी इफ़ादात पेज नं. 40)

★ जहां तक हो सके अल्लाह की किताब में सीधे तौर पर मशगूल हों और कुरआन के मत्न (मूल शब्द) की ज़्यादा से ज़्यादा तिलावत की जाये। उससे लज़्ज़त और ज़ौक हासिल किया जाये और उसके मायने और मतलब में ग़ौर व फ़िक्र किया जाये।

(हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी रह०, मुतालए कुरआन के उसूल व मुबादी, पेज नं. 192,)

★ कुरआन से फायदा उठाने के लिये गौर व फिक्र भी शर्त है, कुरआन ने जगह–जगह ग़ौर व फिक्र की दावत दी है,और मोमिनों की तारीफ की है जो कुरआन मजीद को सोच–समझ कर पढ़ते हैं और इस पर अन्धे बहरे होकर नहीं गिरते।

(हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी रह०, मुतालये कुरआन के उसूल व मुबादी पेज–168)

★ यही वजह है कि न हमारे दिलों में इसकी (कुरआन) की कोई अज़मत है, न इसके पढ़ने पर हमारी तबीयत आमादा होती है, न इस पर गौर व फिक्र का शौक अपने अन्दर पाते हैं और न ही इसे ज़िन्दगी का हक़ीक़ी लाहे अमल बनाने का ख्याल कभी हमें आता है..... लिहाज़ा हममे से हर एक का सबसे पहला फर्ज़ यह है कि वह अपने दिल को अच्छी तरह टटोले और देखे कि वह कुरआन मजीद को महज़ एक विरासत में मिलने वाली मज़हबी अकीदे के बिना पर एक ऐसी पवित्र आस्मानी किताब समझता है जिसका ज़िन्दगी और इसके मुखतलिफ मामलों से कोई ताल्लुक न हो, या उसे यकीन है कि कुरआन अल्लाह का कलाम है जो इसलिए नाज़िल हुआ है कि लोग इससे हिदायत पायें और इसे अपनी ज़िन्दगियों का लाहे अमल बनायें।

(हज़रत डा० इसरार अहमद रह०, कुरआन मजीद के मुसलमानों पर हुकूक– पेज–10)

★ कुरआन पाक की तिलावत के बाद उसके मायने व मतलब में ग़ौर व फ़िक्र किया जाये, कुरआन पाक की मुख़तलिफ़ आयतों में ग़ौर व फ़िक्र की तरग़ीब वारिद हुई है, जामेउल

इल्म में हज़रत अली रज़ि० का यह क़ौल नक़ल किया गया है ''ऐसी इबादत में कोई भलाई नहीं जिसमें शऊर और समझ न हो, ऐसे इल्म में कोई भलाई नहीं जो समझ में न आये, ऐसी तिलावत में कोई भलाई नही जिसमें ग़ौर व फ़िक्र न हो।

(हज़रत अल्लामा युसूफ अल करज़ावी, बहवाला ताल्लुक़ बिल कुरआन, पेज नं0 338)

★ कुरआन इन्सानी अक़्ल व फ़हम (बुद्धि–विवेक) को किस अहमीयत की नज़र से देखता है उसका अन्दाज़ा इससे किया जा सकता है कि सिर्फ लफ़्ज़ ''अक़्ल'' से निकलने वाले लफ़्ज़ मिसाल के तौर पर याकेलून और ताकेलून वग़ैरह कुरआन में 58 जगहों पर इस्तेमाल हुये हैं। इसी तरह लफ़्ज़ ''फ़िक्र'' से निकलने वाले लफ़्ज़ 17 बार और लफ़्ज़ ''अलबाब'' लब की जमा है अक़्ल के मायने में।

(हज़रत अल्लामा युसूफ करज़ावी, फ़िकरी तर्बियत के अहम तक़ाज़े, पेज नं0 42)

★ कुरआन मजीद को छोड़ने की मुख़्तलिफ़ शक्लें हो सकती हैं। यह समझना कि कुरआन मजीद को छोड़ने का कोई ख़ास पैमाना या मेयार होता है और वह अभी तक सामने नहीं आया। एक बड़ी खतरनाक ग़लतफहमी है। यह समझना दुरुस्त नहीं होगा कि कुरआन छोड़ देने की मंज़िल अभी नहीं आई। हिज्र कुरआन या तर्के कुरआन का यह खतरनाक मर्हला आ चुका है, तर्के कुरआन आख़िर क्या है? यही ना कि कुरआन मजीद के अल्फ़ाज़ से ताल्लुक़ ख़त्म हो जाये। कुरआन मजीद के मत्न (Text) को लोग याद करना छोड़ दें,

कुरआन मजीद को समझने की ज़रूरत का एहसास न रहे। कुरआन मजीद के पढ़ने पढ़ाने से दिलचस्पी खत्म हो जाये। लोग कुरआन मजीद के एहकाम पर अमल करना छोड़ दें। कुरआन मजीद को कानून का पहला और बरतर आधार तस्लीम करने से अमली तौर से इन्कार कर दें। यह सारी चीज़ें कुरआन मजीद को छोड़ देने ही की मुख़्तलिफ़ शक्लें हैं।

(डा. महमूद अहमद ग़ाज़ी साहब, महाज़राते कुरआनी, पेज नं.24)

★ तिलावते कुरआन से हमारा मक़सद हरगिज़ यह न हो कि हम जल्द से जल्द इसकी आयतों को पढ़कर ज़्यादा से ज़्यादा नेकियाँ कमायें.....मेरे प्यारे भाई आपको मालूम होना चाहिये कि कुरआनी आयतों से दिल पर पड़ने वाले असरात उन नेकियों से हज़ार गुना ज़्यादा बेहतर और फ़ायदेमन्द हैं जो ऐसी सरसरी तिलावत से हासिल हो, जिससे न कुरआन समझने का मक़सद पूरा हो, न दिल की कैफ़ियत बदले।

(हज़रत अल्लामा मजदी हिलाली, मिस्र, अलतूफ़ान कादम, तर्जुमा– तूफ़ान आ रहा है, पेज नं० 94)

★ कुरआन के मायने और मतलब को समझना, उससे सबक और नसीहत हासिल करना, और उसे ज़बानी याद करना हमने आसान कर दिया है चुनांचे यह हक़ीक़त है कि कुरआन करीम एजाज़ और बलाग़त (चमत्कारपूर्ण अंलकृत भाषा) के एतिबार से बहुत ही ऊंचे दर्जे की किताब होने के बावजूद कोई शख़्स थोड़ी से तवज्जो दे तो वह अरबी ग्रामर और मायने और बलाग़त की किताबें पढ़ें बगैर भी उसे आसानी से समझ लेता है इसी तरह यह दुनिया की वाहिद किताब है,

जो लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ (शब्दशः) याद कर ली जाती है वरना छोटी सी छोटी किताब को भी इस तरह याद कर लेना और उस याद रखना निहायत मुश्किल है और इन्सान अगर अपने दिल व दिमाग़ के दरीचे खोलकर इसे नसीहत की आँखों से पढ़े, नसीहत के कानों से सुने और समझने वाले दिल से उस पर ग़ौर करे तो दुनिया व आख़िरत की भलाई के दरवाज़े उसके लिये खुल जाते हैं और यह उसके दिल व दिमाग़ की गहराईयों में उतरकर कुफ़्र और गुनाहों की सारी गन्दगियों को साफ कर देता है।

(हज़रत मौलाना सलाहउद्दीन यूसुफ, तफसीरे कुरआन सूरह क़मर आयत नं. 17)

★ दुनिया में हम न जाने कितनी किताबें पढ़ते–पढ़ाते हैं और कभी कभी तो पूरी ज़िन्दगी इसमें गुज़ार देते हैं और उसे अपनी सबसे बड़ी कामयाबी समझते हैं, मगर एक मोमिन को अगर कलामे इलाही के पढ़ने–पढ़ाने, उसको याद करने और समझने–समझाने का मौका न मिल पाये या इसके दिल में उसकी अज़मत न हो जो उसका तक़ाज़ा है तो फिर उसके लिये इससे बड़ी कोई महरूमी नहीं है, चाहे वह अपनी क़ाबिलियत में वक़्त का अफ़लातून (Plato) और धन दौलत में दुनिया का मालिक ही क्यों न हो।

(हज़रत मौलाना मुजीबुल्लाह नदवी रह०, कुरआन मजीद की तालीम और उसकी अज़मत, पेज नं 2)

★ यह कितने अफसोस की बात है कि हमारे समाज में और हमारे मदरसों में कुरआन पाक की तालीम को वह बुनियाद हैसियत हासिल नहीं जो उसकी अज़मत का तक़ाज़ा है, बल्कि इनमें

दूसरे उलूम (विद्याओं) ने ज़्यादा बुनियादी हैसियत हासिल कर ली है। कुरआन पाक़ के लिये मुश्किल से रोज़ाना एक घण्टा वक्त दिया जाता है, वह भी सात साल की मुद्दत में एक साल या दो साल जबकि दूसरे उलूम कई–कई साल और कई–कई घण्टे पढ़ाये जाते हैं। यही वजह है कि इन मदरसों के फ़ाज़िलों से बात कीजिये तो वह दूसरे फुनून (कलाओं) से अपनी दिलचस्पी का इज़हार करेंगे मगर हज़ार में एक तालिब इल्म भी कुरआन पाक से किसी ख़ास ताल्लुक़ का इज़हार करता नज़र नहीं आयेगा, यहाँ तक हमने किसी नये फ़ाज़िल के पास कुरआन का अपना ज़ाती नुस्ख़ा नहीं देखा जिसको अपनी तिलावत में बराबर रखता हो या उस पर कोई नोट लिखा हो। इल्ला माशा अल्लाह। इस वक़्त दारुल हदीस और दारुल इफ़्ता बनाने का जितना ज़ोर–शोर दिखाई देता है। दारुल कुरआन या दारुल तफ़सीर के बनाने के सिलसिले में उतनी ही बेवतवज्जेही दिखाई देती है। कुरआन पाक के लिये हमारे मदरसों ने सिर्फ दर्जा–ए–हिफ्ज़ को काफी समझ लिया है या जलालैन (तफ़सीर का नाम) के दौरे को मगर उनको बुनियाद बनाकर सारे उलूम उसकी रोशनी में पढ़ाये जायें और दिलो–दिमाग़ पर उसके मज़ामीन छाये रहें, ऐसा कम होता है।

(हज़रत मौलाना मुजीबउल्ला नदवी रह., कुरआन पाक की तालीम और उसकी अज़मत, पेज नं० 3)

★ अल्लाह तआला ने कुरआन करीम को आसान कर दिया तो बन्दों पर लाज़िम है कि उससे नसीहत हासिल करें, ज़िक्र और फिक्र की दावत देते हुये फ़रमाया– सो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है।.....कुरआन का पढ़ना और याद करना भी आसान है और उसके मायने व मतलब और

मज़ामीन और एहकाम का समझना भी आसान है ।

(हज़रत मुफ्ती आशिक इलाही बुलन्दशहरी, महाजिरे मदनी रह०, तफ़सीर अनवारुल बयान, जिल्द 9, सूरह क़मर, आयत नं.17)

★ हममें से हर एक शख़्स को कुरआन की बात समझने के लिए कुछ न कुछ समय देना चाहिये। कोई अगर पहले से इस किताब का मानने वाला है। इसे इलहामी किताब (ईश्वरीय ग्रन्थ) समझता है तो उसे इस मक़सद से कुरआन पढ़ना और उसे समझना चाहिये कि वह कुरआन के दर्पण में अपना चेहरा देख सके और अपनी जीवन दिशा को ठीक रख सके। वास्तव में कुरआन को मानने वाले व्यक्तियों की ज़िम्मेदारी है कि वे कुरआनी जीवन का आदर्श अपने जीवन से प्रस्तुत करें। क्योंकि इसके बगैर संसार को ज्ञात नहीं हो सकता कि कुरआन किस प्रकार के मनुष्य बनाता है।

(हज़रत मौलाना अबू सलीम अब्दुलहयी रह०, प्रस्तावना– हिन्दी तर्जुमा कुरआन, पेज नं० 9)

★ लगातार कुरआन के अध्ययन से एक वक़्त ऐसा भी आ जायेगा कि आप बग़ैर किसी अनुवाद के कुरआन को उसी ज़बान में समझते चले जायेंगे तब आपको तिलावत की मिठास और लुत्फ़ का अन्दाज़ा होगा कि कितनी बड़े नेमत से अब तक हम महरूम थे ..... मेरा तजुर्बा है कि जो शख़्स भी पूरा कुरआन समझकर पढ़ेगा, वह कभी भी रसूल सल्ल० की इताअत और हदीस के ज़ख़ीरे तो क्या ईमान वालों की पूरी इल्मी व इस्लामी तारीख़ को भी नज़रअन्दाज़ नहीं कर सकता।

(हज़रत मौलाना अब्दुल करीम पारिख, आसान लुग़ातुल कुरआन, पेज नं० 12, 13)

★ कुरआन के अध्ययन से इन्सान को ठोस और वास्तविक ज्ञान प्राप्त होता है जिहालत दूर होती है और इल्म की रोशनी उसको हासिल होती है वह अपनी ज़िन्दगी के मक़सद को भी समझने लगता है और यह भी जानने लगता है कि उसकी ज़िम्मेदारियां क्या हैं उसको अल्लाह की मारिफ़त (समीपता) भी हासिल होती है और उसका डर भी पैदा होता है। अल्लाह के आदेशों की पैरवी करने एवं उनको प्रचलित तथा लागू करने की प्रेरणा भी पैदा होती है।

(हज़रत मौलाना शम्स पीरज़ादा रह०, क्या कुरआन को समझकर पढ़ना जरूरी नहीं?, पेज–17)

★ यह समझना कि इसे कुरआन आलिम लोग ही समझ सकते हैं, सरासर ग़लत है, कुरआन प्रत्येक व्यक्ति को उसका सीधे तौर पर अध्ययन करने, उस पर ग़ौर फिक्र करने, उसकी नसीहत स्वीकार करने की दावत देता है, जो लोग अरबी न जानते हों, वह किसी विश्वसनीय अनुवाद से फ़ायदा उठा सकते हैं परन्तु कुरआन का अर्थ और भावार्थ समझने का प्रयास न करना उससे बड़ी दूरी और बड़ी महरूमी की बात है। अफसोस कि मुसलमानों में यह ग़फ़लत रची–बसी है और ओल्मा ने जहां तफ़सीर और अनुवाद की मूल्यवान सेवा की है और कुरआन के पाठ का सिलसिला चलाते रहे हैं। वहीं कुछ उलेमा ऐसे भी हैं जो अनुवाद की मदद से कुरआन को समझना पसंद नहीं करते और तिलावते कुरआन और हिफज़े कुरआन की फ़ज़ीलतें बयान कर–कर के उन्हें केवल इसी में लगाये रखना चाहते हैं। फ़ज़ीलत से जोकि सही हदीसों से साबित है हरगिज़ इन्कार नहीं किया जा सकता, लेकिन यह उल्मा इस बात पर ज़ोर क्यों नहीं देते कि लोग

कुरआन की समझ हासिल करें।

(हज़रत मौलाना शम्स पीरज़ादा, दावतुल कुरआन, जिल्द 3, पेज नं. 1923)

★ जो लोग कुरआन को न मानें, उनके लिये कुरआन छोड़ना यह है कि वह उसको ख़ुदा की उतारी हुई किताब मानने से इनकार कर दें और जो लोग कुरआन को मानते हों उनके लिये कुरआन को छोड़ना यह है कि वह ज़बान से कुरआन को ख़ुदा की किताब कहें और अपनी ज़िन्दगी को उसके खिलाफ़ चलायें, वह कुरआन को अक़ीदे के तौर पर मानते हुये अमली तौर से छोड़ दें। जब मुसलमानों का हाल यह हो जाये कि वह कुरआन में ग़ौर व फिक्र न करें। वह अपने मसलों का हल कुरआन में तलाश करना छोड़ दें। वह कुरआन के अन्दाज़ पर सोचने के लिये तैयार न हों। उनकी सरगर्मियों की बुनियाद कुरआन न रहे तो गोया उन्होंने कुरआन को मानते हुये कुरआन को छोड़ दिया। उन्होंने कुरआन को ''किताबे महजूर' (छोड़ी हुई किताब) बना दिया।

(हज़रत मौलाना वहीदउद्दीन खाँ, कालल्लाहु व क़ाल–अर्रसूल पेज नं. 69)

★ अगर यह सवाल किया जाये कि कोई शख़्स अपने मुताल्लिक़ किस तरह यह मालूम करे कि उसको ख़ुदा से ताल्लुक़ पैदा हुआ या नहीं तो इसका एक ही जवाब है, वह यह कि आदमी अपने अन्दर टटोल कर देखे कि इसको कुरआन से कितना ताल्लुक़ है। कुरआन से ताल्लुक़ ही ख़ुदा से ताल्लुक़ का इज़हार है। आदमी को कुरआन से जितना लगाव होगा खुदा से भी लगाव उसी कद्र होगा। अगर कुरआन उसकी महबूब तरीन (प्रिय) किताब हो तो

समझना चाहिए कि खुदा उसके नज़दीक महबूब तरीन हस्ती है और अगर इसकी महबूब तरीन किताब कोई और हो तो इसका महबूब भी वही शख़्स होगा जिसकी किताब उसने पसन्द की हो। ख़ुदा उसका महबूब नहीं हो सकता जिस तरह ख़ुदा को हम कुरआन के सिवा नहीं और नहीं पा सकते उसी तरह यह भी मुम्किन नहीं है कि ख़ुदा को पाने के बाद कुरआन के सिवा कोई और चीज़ हमारी महबूब तरीन बन सकें।

(हज़रत मौलाना वहीदउद्दीन खां, अज़मते कुरआन पेज नं० 54)

★ कुरआन खुदा का कलाम है। जो व्यक्ति कुरआन को समझे बग़ैर पढ़ता है वह उसकी अज़मत और महानता को महसूस नहीं कर रहा है। इन्सान किसी अहम बात से यूं ही सरसरी तौर पर नहीं गुज़र जाता, बल्कि उस पर ग़ौर करते हुये आगे बढ़ता है।

(हज़रत मौलाना जलाल उद्दीन उमरी, तजल्लियाते कुरआन पेज नं0 – 53)

★ रमज़ान का महीना शुरू होता है और खत्म भी हो जाता है। हम लोग जैसे पहली रमज़ान को थे, वैसे ही आखिरी रमज़ान को भी होते है। हम महीना भर खड़े होकर कुरआन सुनते हैं और जैसे हम कुरआन सुनने से पहले थे वैसे ही हम उसको सुनने के बाद भी रहते है। लेकिन कुरआन को सुनने वाले जो पहले के लोग थे, उनकी कैफ़ियत यह होती थी कि उनके जिस्म के रोंगटे खड़े हो जाते थे। ख़ाल सख़्त पड़ जाती है और दिल नर्म पड़ जाते हैं, यह असर उनके जिस्म पर पड़ता है, जो इसे सोच समझ कर और दिल लगाकर पढ़ते हैं। कुरआन हमारे यहाँ आज भी पढ़ा जाता

है। हम उसके पन्ने गिनते हैं। कुरआन खत्म होने की खुशी में महफ़िले सजाते हैं लेकिन क्या किसी का दिल नर्म पड़ता है ? किसी के रोंगटें खड़े होते हैं ? किसी को यह एहसास होता है कि जो कलाम पढ़ा जा रहा है वह सारे जहाँ के रब का कलाम है ? नहीं, हम तो यह चाहते हैं कि जल्दी से जल्दी ये पारा, यह सूरह और कुरआन खत्म हो। कुरआन का पहला हक़ यह है कि हम खुद इसको समझें और इस पर अमल करें। हम पर इसका दूसरा हक़ यह है कि लोगों के सामने इसे बयान करें और पेश करें।

(हज़रत मौलाना खुर्रम मुराद रह०, कुरआन का पैग़ाम पेज नं० 15)

★ कुरआन के हम पर बहुत से हक़ हैं। इसका पहला हक़ यह है कि हम खुद इसको समझें और इस पर अमल करें। हम पर इसका दूसरा हक़ यह है कि लोगों के सामने इसे बयान करें और पेश करें। जब रोशनी आती है तो इसलिये नहीं आती है कि उसके ऊपर आदमी परदा और कम्बल डाल दे। रोशनी आती ही इसलिये है कि वह अपने माहौल को रोशन कर दे। अल्लाह की किताब इसलिये आयी है कि इन्सानों को सही रास्ता बताये, इसलिये नहीं कि मखमली कपड़े में लपेटकर रख दी जाये या ड्रांइग रूम की शेल्फ में सजा दी जाये, या कभी कभार उसकी तिलावत कर ली जाये।

(हज़रत मौलाना खुर्रम मुराद रह०, कुरआन का पैग़ाम पेज नं० 17)

★ आप कुरआन की हक़ीक़ी और मुक़म्मल बरकतें उस वक़्त तक नहीं समेट सकते जब तक कि आप इसके मायने समझने में अपने आप को न लगायें और मालूम न करें कि आप का पैदा करने वाला आपसे क्या कह रहा है। बिला

शुब्हा जो लोग मायने नहीं समझ सकते उनके हिस्से में भी कुछ न कुछ बरकतें ज़रूर आती हैं, क्योंकि किसी ऐसी हस्ती की रिफ़ाकत (साथ) में वक़्त गुज़ारना जिससे आपको मुहब्बत है अगर्चे उसकी ज़बान न समझते हों, आप के इस ताल्लुक़ को गहरा करता है, लेकिन अगर आप यह समझें भी कि वह क्या कर रहा है तो यह ताल्लुक़ मज़बूत तर होगा और बरकतें अज़ीमतर होंगी। ..... इसीलिये कुरआन पर ग़ौर व फिक्र के लिये तदब्बुर व तफक्कुर (चिन्तन–मनन) की दावत कुरआन के हर पेज पर मौजूद है। तुम सुनते क्यों नहीं ? तुम देखते क्यों नहीं ? तुम सोचते क्यों नहीं ? तुम अक़्ल से काम क्यों नहीं लेते ? तुम ग़ौर व फिक्र क्यूँ नहीं करते ? अगर यह दावत हर उस इन्सान के लिये नहीं है जो सुनने, देखने और सोचने की सलाहियत रखता है तो किसके लिये है। ..... क्योंकि कुरआन हर शख़्स के लिये रहनुमा, उसका उस्ताद और मुरब्बी (संरक्षक) है, इसलिये इसको समझने की बड़ी अहमीयत है वरना इसकी हैसियत एक मुक़द्दस दस्तावेज (पवित्र लेखपत्र) से ज़्यादा न होगी। दिल व दिमाग़ को कुरआन के पैग़ाम के लिये खोलने में ज़ाती कोशिशों की मकर्ज़ी अहमीयत ख़ुद कुरआन वज़ाहत से बयान कर रहा है।

(हज़रत मौलाना खुर्रम मुराद रह०, कुरआन का रास्ता, पेज नं० 85–90)

★ वाक़िया यह है कि कुरआन करीम के हक़ायक और असरार पर ग़ौर व फिक्र का दरवाज़ा कियामत तक खुला है, और जिस शख़्स को भी अल्लाह तआला ने इल्म व अक़्ल और परहेज़गारी और खौफ़े खुदा की दौलत से नवाज़ा हो वह

ग़ौर व फ़िक्र के ज़रीये नये–नये हकाइक़ तक रसाई हासिल कर सकता है चुनांच हर दौर के मुफ़स्सिरीन (टीकाकारों) ने अपनी–अपनी समझ के मुताबिक इस बाब में इज़ाफ़ा करते आये हैं और यही वह चीज़ है जिसकी आप सल्ल0 ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 के लिये फ़रमायी थी, या अल्लाह इसको तफ़सीर का इल्म और दीन में समझ अता फ़रमां।

(हज़रत मौलाना तक़ी उस्मानी उलूमुल कुरआन, पेज–343)

★ मौजूदा दौर के मुसलमानों की एक बड़ी अकसरीयत कुरआन करीम को घरों, मजलिसों और कब्रस्तानों में अच्छी आवाज़ और लय के साथ तिलावत करने पर मुत्मइन हो गयी है। या बर्कत और पाकीज़गी हासिल करने के लिये कुरआन करीम को घरों में ताक़ की ज़ीनत बनाकर रखा जाता है। उन्हें यह बिल्कुल याद नहीं कि कुरआन की अज़ीम बरकतें उसको समझने और उस पर ग़ौर व फ़िक्र करने, उस पर तन्हाइयों में सोच विचार करने और उसके बयान किये हुये आदाब और तरीकों से फ़ायदा उठाने में पोशीदा है।

(प्रोफेसर गुलाम अहमद हरीरी रह०, तारीखे तफ़सीर व मुफ़स्सरीन, पेज नं0 33)

★ कुरआन से मुसलमानों की बेपरवाई की सातवीं वजह यह हुई कि जब औरंगज़ेब के ज़माने में मुल्ला निज़ामुद्दीन ने मशहूर दर्से निज़ामिया (मदरसों का निसाब) तय्यार किया जो पिछले तीन सौ साल से हमारे अरबी मदारिस पर हुक्मेरा है तो उसमें मन्तिक़ (तर्कशास्त्र) की तो पन्द्रह किताबें रखीं और कुरआन के सिर्फ ढ़ाई पारे और वह भी बतौर तबर्रूक। उसका नतीजा यह निकला कि अरबी मदरसों के तोल्बा (विद्यार्थियों) के दिमाग़ में जो आगे चलकर ओलमा बनते हैं,

कुरआन की कोई भी अहमीयत सिरे से पैदा नहीं होती और वह कुरआन से सम्बन्धित किसी किस्म पर न तक़रीर कर सकते हैं और न चार सतरें लिख सकते हैं, इल्ला माशाअल्लाह।

(प्रो० युसूफ सलीम चिश्ती रह., निदाये मिल्लत लखनऊ शुमारा नं. 36, अक्टूबर 1994)

★ कुरआन पाक को सोच समझकर पढ़ने, उसकी आयतों पर ग़ौर फ़िक्र करने और उसकी दावत और हिकमत को जज़्ब करने की आदत डालनी चाहिये और इसी हौसले और जज़्बे के साथ तिलावत करनी चाहिये और उसके हुक्मों को बजा लाया जाये और उसकी मनाही से बचना है। ख़ुदा की किताब इसीलिये नाज़िल हुई है कि उसको सोच–समझकर पढ़ा जाये और उसके हुक्मों पर अमल किया जाये।

(हज़रत मौलाना मोहम्मद यूसुफ़ इस्लाही, आसान फ़िक़्ह, जिल्द–2, पेज नं. 149)

★ तब सवाल पैदा होता है कि ज़िन्दगी के हर मामले में फिक्र व अमल के लिये सही जवाब जिस पर हक़ीक़ी कामयाबी और बेहतर मुस्तक़िबल (भविष्य) का आधार है, कहां से और कैसे हासिल किया जाये, इस अहम तरीन सवाल के जवाब के लिये कुरआन का पढ़ना और समझ कर पढ़ना ज़रूरी है। अगर कुरआन नहीं पढ़ेंगे तो ज़िन्दगी किसी भी मसले का सही हल यक़ीनी तौर पर मालूम नहीं हो सकेगा। ....चुनांचे कुरआन से फायदा उठाने का सही और प्रभावशाली तरीक़ा भी यही है कि उसके तमाम व्याख्यानों पर पूरा यक़ीन करके उसका अध्ययन किया जाये और उन्हीं

सीमाओं में रहकर ग़ौर व फ़िक्र से काम लिया जाये जो कुरआन ने निर्धारित कर दी है।

(प्रो० अब्दुल मुग़नी, कुरआन क्यों पढ़ें, पेज नं० 8, 14)

★ कुरआन से सही मायनों में फ़ायदा उठाने के लिये ज़रूरी है कि पूरी यकसुई (एकाग्रता) के साथ एक एक लफ़्ज़ पर ग़ौर किया जाये, इसमें तफ़क्कुर व तदब्बुर (चिन्तन) इख़्तियार कर लिया जाये और पूरी तवज्जो से इसको समझने पर ध्यान केन्द्रित किया जाये।

(प्रो० अब्दुल मुग़नी– कुरआन क्यों पढ़ें, बहवाला ताल्लुक बिल कुरआन पेज नं0 368)

★ कुरआन की तिलावत (पाठ) के ज़ाहिरी आदाब पूरे किये जायें। यानी इस पाक हालत में छुआ जाये, अदब से अध्ययन किया जाये, ठहर–ठहर कर पढ़ा जाये और अच्छी आवाज़ से पढ़ा जाये वग़ैरह। इसका तकाज़ा यह है कि इसके मायने को समझा जाये और इन पर गौर व फ़िक्र किया जाये। कुरआन के अल्फ़ाज़ पर से यूं ही न गुज़र जाया जाये, बल्कि उसकी गहराइयों में उतरने और उसके मायने और मफ़हूम को समझने की पूरी कोशिश की जाये यही कुरआन की मांग है।

(डा० खुर्शीद अहमद, कुरआन हकीम मक़सद, पैग़ाम और तक़ाज़े, पेज नं० 16)

★ अफ़सोस कि मुसलमानों ने इस नुस्खा–ए–कीमिया को पीठ पीछे डाल दिया है, उन्होंने कुरआनी तालीमात पर अमल करना छोड़ दिया है, जिस किताब की बुनियाद पर दुनिया एक अज़ीमुश्शान इंक़लाब देख चुकी है, उसे आज ताक़ों की

सजावट और बर्कत का सामान बनाकर रख दिया गया है और उसकी तिलावत व क़िरअत को बस सवाब हासिल करने का ज़रीया समझ लिया गया है।

(मौलाना मसीहुज़्ज़माँ फ़लाही नदवी, तूफ़ान आ रहा है, पेज नं० 8)

★ बहरुल उलूम (इल्म का समन्दर) अगर किसी किताब पर सही सादिक़ आता है तो वह यही कुरआन है जिस को आज के मुसलमान ने रेशमी गिलाफों में सजाकर ताक़ की ज़ीनत बना रखा है और जिससे वह भूत–प्रेत भगाने का काम लेता है, हालांकि यह किताब इसलिये उतारी गयी है कि इन्सानों की सही रहनुमाई की जाये। बातिल कूव्वतों से टकरा कर के उनको अधीन किया जाये और ख़ुदा की ख़ुदाई व बड़ाई का आवाज़ा बुलन्द किया जाये, इन्सान पर से इन्सान की खुदाई का कलादा (गले का पट्टा) उतार फेंका जाये और उसकी गर्दन को सिर्फ ख़ुदा के सामने झुकाया जाये और पूरी दुनिया को यह बता दिया जाये कि सारी बलन्दी और अज़मत सिर्फ खुदा के लिये है और बाकी सब बुत हैं जिनके सामने सजदा करना या उनसे उम्मीदें लगाना इन्सानियत के लिये कलंक है।

(प्रो० उमर हयात ग़ौरी, इक़बाल और मौदूदी का तक़ाबली जाइज़ा पेज नं० 14)

★ जिस तरह कुरआन पाक पर अमल करना सिर्फ ओलमा की ज़िम्मेदारी नहीं बल्कि तमाम मुसलमानों की ज़िम्मेदारी है उसी तरह कुरआन पाक का इल्म व फ़हम हासिल करना भी सिर्फ ओलमा की ज़िम्मेदारी नहीं, बल्कि तमाम मुसलमानों

की ज़िम्मेदारी है। हर मुसलमान का फर्ज़ है कि वह यह जाने कि उसके रब ने अपनी किताब में क्या फ़रमाया है ? उसके लिये इसने क्या पैग़ाम भेजा है ? उसे किन बातों का हुक्म दिया है और किन बातों से रोका है।

(हज़रत मौलाना इनायत उल्लाह सुब्हानी, बहवाला रफ़ीके मंज़िल उर्दू, मई 2011)

★ क़ुरआन पाक पर ग़ौर व फ़िक्र करने के लिए किसी ख़ास इल्मी और फ़िकरी सतह की शर्त नहीं है, किसी ख़ास इल्मी व फ़िक्री सतह की शर्त लगाकर उम्मते मुस्लिमा को फ़हमे क़ुरआन से मायूस करना बहुत बड़ी ज़्यादती है। जिसकी जवाबदेही से हम नहीं बच सकते।..... यह क़ुरआन सबके लिये आया है, सारे मुसलमानों और सारे इंसानों के लिए आया है। इसका मतलब यह है कि हर इल्मी और फ़िक्री सतह के साथ क़ुरआन पाक पर ग़ौर व फ़िक्र किया जा सकता है। शर्त सिर्फ यह है कि नियत ख़ालिस और पाक हो। और ग़ौर व फ़िक्र का मक़सद इल्म की तलब और हिदायत की तलब हो, जो लोग क़ुरआन पाक पर ग़ौर नहीं करते, उन्हें मलामत करते हुये अल्लाह तआला फ़रमाते हैं– ''क्या यह लोग क़ुरआन पर ग़ौर नहीं करते या इनके दिलों पर ताले चढ़े हुये हैं?'' (सूरह मुहम्मद–24)

(मौलाना इनायतुल्लाह सुब्हानी साहब, उम्मते मुस्लिमा का फिक्री बोहरान और उसका इलाज, पेज नं 20)

★ हम क़ुरआन मजीद को पूरी तवज्जोह, दिलचस्पी, दिल के ठहराव, यकसूई (एकाग्रता) और ग़ौर व फ़िक्र के साथ पढ़ें। थोड़ा–थोड़ा पढ़ें, जितना पढ़ें और समझते चलें। इस पर भी

अमल करते रहें, यही हिकमत थी जिसके तहत अल्लाह तआला ने पूरे क़ुरआन को एक ही वक़्त में नाज़िल करने के बजाय थोड़ा–थोड़ा नाज़िल फ़रमाया।..... अल्लाह के रसूल सल्ल० से सरसरी और फर्राटे वाली तिलावत का कोई सुबूत नहीं मिलता। आप सल्ल० ने खुद भी ठहर–ठहर कर पढ़ा और अपने सहाबा को भी इसी तरह पढ़ने की तलकीन फ़रमाई है। इसीलिये सहाबा–एकराम रज़ि ने मात्र कुछ आयतों के समझने और ग़ौर व फ़िक्र में सालों लगा दिये हैं।

(हज़रत मौलाना उमर असलम इस्लाही, दर्से कुरआन की इल्मी तैयारी, पेज नं. 12)

★ क़ुरआन का मुतालबा (मांग) ग़ौर व फ़िक्र और नसीहत है। क़ुरआन का सिर्फ ज़बानी पढ़ना और याद करना काफी नहीं है। क़ुरआन का अस्ल मक़सद उसको समझना और उसकी आयतों में ग़ौर व फ़िक्र है जब तक इन्सान क़ुरआन को समझेगा नहीं उस वक्त तक उसे क़ुरआन की हलावत (मिठास) नसीब नहीं हो सकती। .....हमारे ज़माने में मुसलमानों की अकसरीयत क़ुरआन समझने के तक़ाजों से ग़ाफ़िल है वह समझती है कि इसके लिए तिलावत काफी है और क़ुरआन का समझना उलमा का काम है वह अपने बाप–दादों, पीरों और उस्तादों की किताबें पढ़ती और समझती है मगर अल्लाह की किताब को समझने की कुछ ज़रूरत महसूस नहीं करती हालाँकि सहाबा कराम क़ुरआन को सिर्फ पढ़ते ही नहीं थे बल्कि इसको अच्छी तरह समझते थे।

(प्रोफेसर सऊद आलम क़ासमी, कुरआन की दावते फिक्र, पेज नं० 32)

★ अल्लामा इक़बाल जिस ज़माने में लन्दन में ठहरे थे उनकी किसी के यहाँ दावत हुई, इस दावत में एक ऐसे दानिशवर (विद्वान) भी मौजूद थे जिनका परिचय पत्थरों के माहिर की हैसीयत से कराया गया। इक़बाल ने उनसे अपने इल्म के किसी पहलू पर रोशनी डालने को कहा तो उन्होंने इक़बाल को अपने साथ समन्दर के किनारे पर चलने को कहा। वहाँ पहुँचकर उस दानिशवर ने एक पत्थर का टुकड़ा उठाया और उस पर बात करना शुरू की और निहायत क़ीमती मालूमात इस पत्थर की हक़ीक़त, ज़रूरत, अहमीयत, फायदों और कायनात से उसके सम्बन्ध पर दी। इक़बाल हैरत में पड़ गये कि पत्थर का एक छोटा सा टुकड़ा जो हमारी नज़र में बज़ाहिर कोई चीज़ नहीं, भला उसके अन्दर इतनी चीज़ें जमा हो सकती हैं। खुदा का कलाम, उसकी मामूली तख़लीक (रचना) पत्थर से ज़्यादा अपने अन्दर हिक़मत और मायने की तहें रखता है मगर यह उन्हीं लोगों पर स्पष्ट हो सकती हैं जो क़ुरआन की समझ और बसीरत अपने अन्दर रखते है और क़ुरआन जिनको रासेखूना फिल इल्म (पुख़्ता इल्म वाले) क़रार देता है।

(प्रोफेसर सऊद आलम क़ासमी, बहवाला कुरआन की दावते फिक्र, पेज नं. 26)

★ हम देखते हैं कि हमारे अधिकतर मुसलमान भाई क़ुरआन से ग़ाफ़िल और उसकी तालीमात से बेख़बर और नावाक़िफ़ हैं, उनकी दीनी मजलिसों और मस्जिदों में दूसरी किताबें बड़ी पाबन्दी से पढ़ी जाती हैं, मगर क़ुरआने मजीद का तर्जुमा व तफ़सीर पढ़ने का एहतेमाम नहीं। ग़ैर मुस्लिम भाईयों तक

यह कीमती नुस्खा और सारे जहानों और सारे इंसानों के रब का यह पैग़ाम पहुंचाना तो अलग रहा, वे खुद भी उससे फायदा उठाने को ग़लत समझते हैं। ना जाने क्यों और कैसे यह ग़लत ख़्याल उनके दिल में बैठ गया है कि क़ुरआन ग़ैर मुस्लिमों को पढ़ने के लिए नहीं देना चाहिये जबकि दुनिया में खुदा की जितनी भी नेमतें है, वह सब आम हैं, उनसे फायदा उठाने पर किसी के लिये कोई पाबन्दी नहीं। सूरज, चांद, हवा, बारिश, वनस्पतियाँ और खनिज पदार्थ आदि सारी नेमतें सारे ही इंसानों के लिये हैं और सब उनसे फायदा उठा रहे हैं, फिर आखिर खुदा की सबसे बड़ी नेमत यानी सारे ही इंसानों के रब के आखिरी हिदायनामे क़ुरआन से फायदा उठाने पर पाबन्दी क्यों ? किसी को क्या हक़ पहुंचता है कि वह इस हिदायतनामे से इंसानों को महरूम रखे जो सारे इंसानों के रब की तरफ से सारे ही इंसानों के लिये आया है।

(हज़रत मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही, क़ुरआन और हम मुसलमान , पेज नं. 11)

★ क़ुरआन की बर्कतों से महरूमी का बुनियादी सबब क़ुरआन को मुश्किल समझ लेना और यह मान लेना है कि उसके मायने व मतलब को समझना हर एक के बस की बात नहीं। हक़ीक़त यह है कि क़ुरआन अपने पाठक से खुद उसकी अपनी ज़ेहनी सतह (बौद्धिक स्तर) पर मिलता है और खुद उसकी अपनी योग्यता और सामर्थ्य के हिसाब से अपने मायने और मतलब स्पष्ट करता है।

(डा. हसन उद्दीन, क़ुरआन फ़हमी आसान रास्ता , पेज नं. 5)

★ मुसलमान घरानों में आमतौर पर क़ुरआन पाक की तिलावत की जाती है। आज के मुक़ाबले में पिछले दौर में इसका आम

चलन था। आज मग़्रबी और ग़ैर इस्लामी तहज़ीब के असरात ने इस बर्कत को हमसे छीन लिया है, लेकिन जो पढ़ते भी हैं, वह भी महज़ सवाब कमाने की ख़ातिर पढ़ते हैं। यह जानकर नहीं कि यह किताबे ज़िन्दगी है और ज़िन्दगी के बनाने, संवारने, सालेह और नेक बनाने के लिये नाज़िल हुयी है और पूरी दुनिया से बुराई को मिटाने और नेकी को फैलाने के लिये नाज़िल हुई है। जुल्म और ज़्यादती को मिटाने और अदल व इन्साफ़ को क़ायम करने के लिये उतरी है और हर पढ़ने वाले को मुख़ातिब बनाती है। यह किताब मारूफ़ का हुक्म देती है और मुन्कर से परहेज़ करने की तलक़ीन करती और तालीम देती है। **(सै० अली शाह गीलानी, इकबाल रूहे दीन का शनासा, पेज 28)**

★ इताअत के लिये ज़रूरी है कि अल्लाह की किताब क़ुरआन की पैरवी की जाये, उसकी तिलावत की जाये उसको समझने के लिये मेहनत और कोशिश की जाये। फिर ज़िन्दगी में उसके हुक्मों और हिदायतों पर अमल किया जाये और वह जो निज़ाम और दीन लेकर आया है, उसको अपनी ज़ाती ज़िन्दगी से लेकर इज्तेमाई ज़िन्दगी पर ग़ालिब किया जाये और उसके मुक़ाबले में जितने भी निज़ामे ज़िन्दगी पेश किये जायें, उनसे ज़ेहनी और अमली तौर पर नफ़रत किया जाये।

(हज़रत मौलाना अली शाह गीलानी, बहवाला अनमोल मोती, पेज नं. 106)

★ हर मुसलमान मर्द और औरत और बच्चे और जवान को आमादा किया जाये कि क़ुरआन से अपना रिश्ता जोड़ें, उसके मायने और मफ़हूम को समझें और उसे अपने लिये

किताबे हिदायत बना लें। लम्बी चौड़ी इल्मी बहसों और तफ़सीरी महफ़िलों का अपना मुक़ाम है और उनकी इफ़ादियत से इन्कार मुम्किन नहीं, लेकिन इस प्रोग्राम का अस्ल मक़सद हर मुसलमान को चाहे वह पढ़ा लिखा हो या अनपढ़, क़ुरआन पाक को पढ़ने और उसके तर्जुमे और मफ़हूम से वाक़िफ़यत पैदा करने का मौक़ा फ़राहम करना है।

(प्रो० खुर्शीद अहमद साहब,
आलमे इस्लाम और तहरीके इस्लामी, पेज नं. 25)

★ तिलावते क़ुरआन का मक़सद सिर्फ अल्फ़ाज़ को ज़बान से अदा करना नहीं है बल्कि उसके साथ–साथ उसको समझने की कोशिश करना भी है। जो लोग बेसमझे क़ुरआन की तिलावत करते हैं वह ज़रा रसूलुल्लाह सल्ल० के इरशाद पर ग़ौर फ़रमायें कि– ''जो तीन दिन से कम में क़ुरआन पढ़ेगा वह कुछ न समझेगा'' यानी पढ़ने से अस्ल मक़सद समझने की कोशिश करना है। मामूली से मामूली चीज़ भी अगर कोई शख़्स पढ़ता है तो बराबर कोशिश में लगा रहता है कि उसका दिमाग़ हाज़िर रहे और जो कुछ पढ़ रहा है उसका कुछ न कुछ मतलब वह ज़रूर समझे, यह क़ुरआन मजीद की मज़लूमियत है कि लोग पढ़ने हैं और समझने की कोशिश नहीं करते। हालांकि दुनिया की कोई किताब नहीं जिसमें क़ुरआन से ज़्यादा समझने और ग़ौर फ़िक्र के साथ पढ़ने पर ज़ोर दिया हो.....वह लोग जो क़ुरआन की तिलावत खूब करते हैं लेकिन समझने की कोशिश नहीं करते उनकी मिसाल उस नमाज़ी जैसी है जो नमाज़ तो पढ़ते हैं लेकिन उन्हें नहीं मालूम कि नमाज़ में क्या पढ़ा, किस चीज़ का इक़रार किया और किस चीज़ का इंकार किया।

जिस तरह ऐसी नमाज़ अदा तो हो जाती है लेकिन अपने नतीजे नहीं देती, अज्र व बरकत के ऐतबार से नाकिस रहती है, इसी तरह तिलावते क़ुरआन से सवाब तो ज़रूर हासिल हो जाता है लेकिन मायने और मतलब से नावाक़िफ़ रहने की वजह से रहनुमायी और तज़किया व तर्बियत का फ़ायदा हासिल नहीं हो पाता जो बहुत बड़ी महरूमी है। क़ुरआन रौशनी है और हर एक से ज़रूर पूछा जायेगा कि तुमने इससे रौशनी हासिल की या नहीं ? कहीं ऐसा न हो कि इस लापरवाही की वजह से क़ुरआन हमारे ख़िलाफ़ हुज्जत बन जाये ।

(हज़रत मौलाना अब्दुल बर असरी, इस्लामियात, जिल्द–5, पेज नं. 23)

★ क़ुरआन मजीद का एक मक़सद सोचने समझने की सलाहियतों को जगाना और दिल व दिमाग़ को तरक्की देना भी है, यह मक़सद जब ज़हन से ओझल हो जाता है तो हम क़ुरआन मजीद पढ़ते हुये भी इसके एक बहुत बड़े फ़ायदे से महरूम रहते हैं। जब हम बार–बार क़ुरआन मजीद में ग़ौर फ़िक्र करें तो वह अज़ीम फ़ायदा भी हमारे पेशे नज़र रहना चाहिये। क़ुरआन मजीद का अध्ययन करने वालों को ज़िन्दगी की गुत्थियाँ सुलझाने और इंसानों की समस्याओं के हल करने में सबसे आगे होना चाहिये क्योंकि क़ुरआन मजीद न सिर्फ गुत्थियाँ सुलझाता है बल्कि गुत्थियाँ सुलझाने का तरीक़ा भी बताता है। वह क़ायनात की सैर भी कराता है और क़ायनात की सैर कैसे करते हैं यह भी सिखाता है।

(डा. मुहीउद्दीन ग़ाज़ी, रफ़ीक़े मंज़िल जनवरी 2015, पेज नं. 4)

★ क़ुरआन इन्सानियत के नाम अल्लाह की तरफ से हिदायत का पैग़ाम हक़ व बातिल, सही और ग़लत और हिदायत और गुमराही के फ़र्क़ को स्पष्ट करने वाली किताब है। अल्लाह तआला ने इसकी आयतों में ग़ौर व फ़िक्र और चिन्तन को उसके नाज़िल किये जाने का मक़सद क़रार दिया ताकि इन्सान इस ग़ौर व तदब्बुर के नतीजे में जिहालत व गुमराही की अंधकारयुक्त पगडण्डियों से निकलकर इल्म हिदायत की रौशन मार्ग पर आ जाये.....लेकिन बदक़िस्मती से ख़ुद क़ुरआन पर ईमान रखने वाले आम मुसलमानों में आजकल क़ुरआन के बारे में यह ग़लत ख़्याल आम होता जा रहा है कि आम लोगों को क़ुरआन समझकर पढ़ने की कोशिश नहीं करना चाहिये वरना वह गुमराह हो जायेंगे क्योंकि क़ुरआन के समझने और उससे हिदायत व नसीहत हासिल करने के लिये जिन उलूम (विद्यायें) की ज़रूरत है, उससे आम मुसलमान वंचित और नावाक़िफ़ है। क़ुरआन के फ़ैज़ाने हिदायत के सम्बन्ध से यह बहुत ही खतरनाक भूल है। क़ुरआन की तफ़सीर और उससे मसायल निकालने के लिये तो यक़ीनी तौर पर उन उलूम की शर्त लाज़िम है लेकिन जहाँ तक क़ुरआन से हिदायत और नसीहत हासिल करने का मसला है तो उसके लिये क़ुरआन में इल्म की शर्त नहीं बल्कि तक़वा की शर्त है। तक़वा न हो तो तमाम उलूम जानने वाला अल्लामा को भी क़ुरआन से हिदायत के बजाय गुमराही मिलेगी। इस हक़ीक़त को अल्लाह तआला ने क़ुरआन में اضله الله علی علم के अल्फ़ाज़ से वाज़ेह किया है। क़ुरआन

का फैज़ाने हिदायत व नसीहत आम है, जो शख़्स भी तक़वा और खुलूस के साथ उसकी आयतों में ग़ौर व फिक्र करेगा वह यक़ीनी तौर पर हिदायत और अल्लाह के पसंदीदा रास्ते को पा लेगा। चाहे वह आम आदमी हो या आलिम।

(हज़रत मौलाना रियाज़ अहमद खाँ, मोतालए कुरआन की ज़रूरत व अहमियत, पेज नं0 4)

क़ुरआन अल्लाह का कलाम है उसका तकाज़ा है कि हम -

- क़ुरआन को समझ कर पढ़ने का एहतेमाम करें। रोज़ाना चाहे दस आयतें ही क्यों न हो, उनकी तिलावत करें फिर तर्जुमा पढ़ें और फिर उस पर ग़ौर करें।
- अपने बच्चों, घर वालों और पास पड़ोस में भी क़ुरआन समझ कर पढ़ने को बढ़ावा दें। घर-घर में तर्जुमा वाला क़ुरआन फ़राहम करें।
- दर्से क़ुरआन के हल्क़े जगह-जगह क़ायम करें, हर मस्जिद में इसका एहतिमाम करें, दीनी इज्तिमात में दूसरी किताबें को पढ़कर सुनाने की जगह क़ुरआन को प्राथमिकता दें।
- क़ुरआन का मक़सदे नुज़ूल ही यह है कि लोग इसको समझें और अमल करें। ज़ाहिर है अगर क़ुरआन को समझेंगें नहीं तो इस पर अमल कैसे करेंगे।
- छोटे बच्चों को क़ुरआनी सूरतें/आयतें तर्जुमा के साथ याद कराई जायें ताकि बचपन ही से क़ुरआन के मायने और मफ़हूम इनके ज़ेहन में बैठ जाये।
- नाज़रा के साथ बच्चों को क़ुरआन का तर्जुमा पढ़ने की तर्ग़ीब दी जाये ताकि बचपन ही से उनके ज़ेहन में यह बात बैठ जाये कि यह किताब समझ कर पढ़ने की है।

मुसलमानों पर सिर्फ यही ज़िम्मेदारी नहीं है कि वह क़ुरआन को पढ़े, समझें और उसकी तालीमात पर अमल करे बल्कि उनपर यह भी फ़र्ज़ है कि उसकी दावत को सारे इन्सानों तक पहुँचाएं। क़ुरआन का पैग़ाम सारे इन्सानो के लिये है और उस पैग़ाम को इन्सानों तक पहुंचाना सारे मुसलमानों की ज़िम्मेदारी है।